महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर-273007 (उ.प्र.)

सेवा पथ

मासिक ई-पत्रिका

- वर्ष-2
- अंक-11
- जुलाई, 2024

प्रकाशक

राष्ट्रीय सेवा योजना एवं राष्ट्रीय कैडेट कोर

- University Email-mguniversitygkp@mgug.ac.in
- NSS Email-coordinator.nss@mgug.ac.in
- University Website-www.mgug.ac.in
- NCC Email-ncc@mgug.ac.in

Arogya Dham, Balapar Road, Sonbarsa, Gorakhpur-273007 (U.P.) | coordinator.nss@mgug.ac.in | www.mgug.ac.in

सम्पादक

डॉ. अखिलेश कुमार दूबे

सहायक आचार्य (सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय)

कार्यक्रम समन्वयक, राष्ट्रीय सेवा योजना

सह सम्पादक

डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव

सहायक आचार्य (सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय)

एसोसिएट एनसीसी ऑफिसर

ग्राफिक्स एवं डिजाइन

श्री शारदानन्द पाण्डेय

राष्ट्रीय सेवा योजना

विश्वविद्यालय संगठन

कुलपति : मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेई

कुलसचिव : डॉ. प्रदीप कुमार राव

कार्यक्रम समन्वयक : डॉ. अखिलेश कुमार दूबे

इकाई सं0	इकाई कोड	इकाई का नाम	कार्यक्रम अधिकारी का
1	UP-80/001/24/001	पारिजात इकाई	डॉ. आयुष कुमार पाठक
2	UP-80/002/24/101	अष्टावक्र इकाई	श्री साध्वीनन्दन पाण्डेय
3	UP-80/003/24/201	आर्यभट्ट इकाई	श्री धनन्जय पाण्डेय
4	UP-80/004/24/301	माता सबरी इकाई	श्री अभिषेक कुमार सिंह
5	UP-80/005/24/401	नचिकेता इकाई	कु. अभिनव सिंह राठोर
6	UP-80/006/24/501	माता अनुसुईया इकाई	सुश्री सुमन यादव
7	UP-80/007/24/601	गार्गी इकाई	सुश्री कविता साहनी
8	UP-80/008/24/701	मैत्रेयी इकाई	

राष्ट्रीय कैडेट कोर

101 यू.पी. एन.सी.सी. बटालियन, गोरखपुर

एसोसिएट एनसीसी ऑफिसर : डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव

‘सेवा पथ’

‘सेवा पथ’ एक मासिक ई–पत्रिका है, जिसका प्रकाशन महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में संचालित **‘राष्ट्रीय सेवा योजना’** एवं **‘राष्ट्रीय कैडट कोर’** के द्वारा विश्वविद्यालय परिसर एवं विश्वविद्यालय के बाहर दिए जा रहे योगदान, सामाजिक सेवा, समाज के उत्थान हेतु किए जा रहे कार्यों इत्यादि का संकलन किया गया है। **‘सेवा पथ’** मासिक ई–पत्रिका का **प्रथम संस्करण** माह **अगस्त 2023** में प्रकाशित किया गया था, जिसमें केवल **‘राष्ट्रीय सेवा योजना’** द्वारा किए गए सामाजिक कार्यो एवं क्रियाकलापों को संकलन किया गया था। किन्तु आगे की कड़ी में बढ़ते हुए इस माह की मासिक ई–पात्रिक के **‘चतुर्थ संस्करण’** में राष्ट्रीय सेवा योजना के साथ–साथ राष्ट्रीय कैडट कोर की इकाई के द्वारा किए जा रहे गतिविधियों को भी शामिल किया जा रहा है।

इस मासिक ई–पत्रिका का नाम **‘सेवा पथ’** शब्द सामाजिक सेवा और सामाजिक उत्कृष्टता की प्रवृत्ति की ओर केन्द्रित है। यह एक व्यक्ति या समूह का उद्दीपन करता है जो समाज में सेवा करने के लिए समर्पित है। **‘सेवा पथ’** का आशय है कि व्यक्ति या समूह अपने कौशल, समर्पण की भावना से समाज की सेवा करें व दूसरों को भी सेवा करने के लिए उद्दीपित करता रहे। व्यक्ति या समूह जो सेवा पथ पर होता है, वे सामाजिक समस्याओं की पहचान करने के साथ–साथ समाधान ढूंढने और उन्हें सुलझाने में योगदान करता है। सामाजिक सेवा के माध्यम से, सेवा पथ से जुड़े व्यक्ति या समूह समृद्धि, समर्पण और सामाजिक न्याय की ओर प्रबल कदम बढ़ाता है।

इस तरह **‘सेवा पथ’** एक मार्गदर्शक शब्द है जो सेवा और समृद्धि की दिशा में अग्रसर होने के लिए सभी को प्रेरित करता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना एक नजर में...

भारत में राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा छात्रों का प्रथम कर्तव्य उनके अध्ययन की अवधि को केवल बौद्धिक ज्ञान तक ही सीमित न रखकर स्वयं को ऐसे व्यक्तियों की सेवा में समर्पित करना है जिन्हें राष्ट्र की वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता हो और उन्हें हमारे देश की आवश्यक वस्तुएं प्रदान की जा सके, जो कि समाज के लिए अतिआवश्यक है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में स्वैच्छिक आधार पर शैक्षिक संस्थाओं में **''राष्ट्रीय सेवा''** आरम्भ करने की सिफारिश की गयी थी। सन् 1959 में शिक्षा मंत्री के सम्मेलन के समक्ष योजना का एक मसौदा रखा गया। इस दिशा में सटीक सुझाव देने के लिए **28 अगस्त, 1959** को **डॉ. सी. डी. देशमुख** की अध्यक्षता में एक **''राष्ट्रीय सेवा समिति''** का गठन किया गया।

सन् 1960 में भारत सरकार की पहलता पर प्रो. के.जी. सैय्यदेन ने विश्व के कई देशों में छात्रों द्वारा क्रियान्वित **''राष्ट्रीय सेवा''** का अध्ययन किया और कई सिफारिशों के साथ सरकार को युवाओं के लिए **''राष्ट्रीय सेवा''** शीर्षक के तहत अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. डी.एस. कोठारी (1964–66) की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग ने यह सिफारिश दी की शिक्षा के सभी स्तरों पर छात्रों को सामाजिक सेवा के किसी रूप से जोड़ा जाना चाहिए। इस पर अप्रैल, 1967 में राज्य शिक्षा मंत्री द्वारा उनके सम्मेलन के दौरान विचार किया गया की **''राष्ट्रीय सेवा योजना''** (एन.एस.एस.) नामक एक नया कार्यक्रम प्रदान किया जा सकता है। सितम्बर, 1969 में सभी विश्वविद्यालयों के कुलपति के सम्मेलन में इस सिफारिश का स्वागत किया गया।

मई. 1969 में शिक्षा मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थाओं के छात्र प्रतिनिधियों के सम्मेलन में घोषणा की गई कि **''राष्ट्रीय सेवा योजना''** राष्ट्रीय एकता के लिए सशक्त माध्यम हो सकती है। 24 सितम्बर, 1969 को तत्कालीन शिक्षामंत्री डॉ. वी.के. आर.वी. राव ने सभी राज्यों को शामिल करते हुए 37 विश्वविद्यालयों में **''राष्ट्रीय सेवा योजना''** (एन.एस. एस.) कार्यक्रम आरंभ किया। जिसका प्रथम उद्देश्य विद्यार्थियों में स्वैच्छिक सामुदायिक सेवा के माध्यम से उनके व्यक्तित्व और चरित्र का विकास करना ही नही अपितु **'सेवा के माध्यम से शिक्षा देना'** ही राष्ट्रीय सेवा योजना का मुख्य उद्देश्य है।

आज राष्ट्रीय सेवा योजना विश्व भर में राष्ट्रीय विकास, सेवा, शांति, राष्ट्र निर्माण की दिशा में कार्य करने वाले छात्र समूह की सबसे बड़े रचनात्मक संगठन के रूप में हमारे सामने है। राष्ट्रीय सेवा योजना ने अपने गौरवशाली वर्षों में युवा जागरुकता, राष्ट्र निर्माण और विश्व शांति के लिए अनेकानेक कार्यक्रमों के साथ अपनी पहचान बनाई है। ऐसे महान संगठन में आपका स्वागत है।

आइए! हम सब मिलकर एक समृद्ध राष्ट्र, एक विकसित राष्ट्र, एक जागृत राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दें।

जय हिंद, जय भारत।

कार्ययोजना

राष्ट्रीय सेवा योजना विद्यार्थियों को सृजनात्मक एवं रचनात्मक कार्यों के प्रति प्रेरित कर समाज सेवा का अवसर प्रदान कर उनके व्यक्तित्व को निखारने एवं भविष्य में उन्हें कर्त्तव्यनिष्ठ, संवेदनशील तथा उपयोगी नागरिक के रूप में सवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। राष्ट्रीय सेवा योजना से प्राप्त प्रमाण–पत्र स्वयं सेवकों के अच्छे भविष्य के निर्माण में सहायक हैं। विद्यार्थी शासकीय तथा गैर शासकीय सेवाओं में इन प्रमाण–पत्रों का प्रयोग कर सकते हैं। उच्चतर कक्षाओं के विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के समय राष्ट्रीय सेवा योजना प्रमाण–पत्र धारक छात्रों को अतिरिक्त बोनस अंक भी दिये जाते हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत दो प्रकार के कार्यक्रमों का संचालन होते हैं :–

1. सामान्य कार्यक्रम 2. विशेष शिविर कार्यक्रम

1.सामान्य कार्यक्रम :–

सामान्य कार्यक्रम के अन्तर्गत **'राष्ट्रीय सेवा योजना'** में पंजीकृत प्रत्येक विद्यार्थी को स्वयं सेवक के रूप में एक वर्ष में कम से कम 120 घंटे का समाज सेवा कार्य करना पड़ता है और दो वर्ष की अवधि में अर्थात् 240 घंटे का समाज सेवा कार्य पूरा करने पर उसे विश्वविद्यालय / महाविद्यालय से प्रमाण पत्र दिया जाता है।

2. विशेष शिविर कार्यक्रमः–

राष्ट्रीय सेवा योजना की प्रत्येक इकाई द्वारा वर्ष में एक दस दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया जाता है। शिविर विश्वविद्यालय महाविद्यालय के निकट किसी ग्राम में लगाया जाता है। विशेष शिविर में शिविर अनुभव भी अपना एक विशेष महत्व रखता है। इसमें भाग लेने वाले प्रतिभागी शिविर जीवन का अनुभव प्राप्त करते हैं तथा एक अच्छे नागरिक के कर्त्तव्य का पालन एवं समाज के लिए वे क्या सेवा कर सकते हैं इसका ज्ञान प्राप्त करते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना की विभिन्न इकाईयों द्वारा स्थानीय आवश्यकताओं स्त्रोतों और कुशल व्यक्तियों को देखते हुए विविध प्रकार के कार्यक्रम अभिग्रहित क्षेत्रों में लिए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यार्थीगण अन्य क्षेत्रों में भी कार्य के लिए स्वतंत्र होंगे।

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ होती हैं–

- शिक्षा एवं मनोरंजन इसके अन्तर्गत साक्षरता, स्कूली शिक्षा पाठशाला छोड़ने वाले बच्चों की शिक्षा बालगृहों में कार्यशाला प्रवेश कार्यक्रम सांस्कृतिक गतिविधियाँ ग्रामीण एवं देशी खेलकूद सामाजिक बुराईयों के उन्मूलन पर चर्चाएं एवं जागरूकता के कार्यक्रमों का आयोजन मुख्य है।

- आपातकाल के कार्यक्रम विद्यार्थियों को प्रमुख रूप से लोगों को उनकी असहायता पर काबू पाने योग्य बनाने के लिए उनके साथ मिलकर कार्य करने सम्बन्धी कार्यक्रमों पर जोर देना चाहिए। इसके अलावा प्राकृतिक विपदाओं जैसे– भूकम्प, बाढ, तूफान आदि के आने पर सहायता और पुन्रर्वास कार्यो में स्थानीय लोगों अधिकारियों संस्थाओं को सहयोग देना प्रमुख हैं।

- पर्यावरण संवर्धन एवं परिक्षण ऐतिहासिक स्मारकों पुरावशेषों व अन्य सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण एवं उनके प्रति चेतना पैदा करना पर्यावरण के प्रति समाज में चेतना जागृत करना वृक्षारोपण उनका बचाव और अनुरक्षण स्वच्छता के लिए सड़कों गलियों नालियों तालाबों पोखरों कुओं आदि की सफाई भूमि क्षरण की रोकथाम तथा भूमि सुधार गोबर गैस संयत्र सौर ऊर्जा के प्रयोग का प्रचार करना।

- स्वास्थ्य, परिवार, कल्याण और आहार पोषण कार्यक्रम, टीकाकरण, रक्तदान, स्वास्थ्य शिक्षा और प्राथमिक स्वास्थ्य की देखभाल जनसंख्या शिक्षा और परिवार कल्याण रोगियों अनाथों वृद्धों की सहायता स्वच्छ पेयजल के प्रदाय की व्यवस्था एकीकृत बाल विकास तथा पौष्टिक आहार कार्यक्रमों का संचालन करना।

- महिलाओं के स्तर सुधार के कार्यक्रम महिलाओं की शिक्षा तथा उन्हें अपने संवैधानिक और कानूनी अधिकारों के प्रति सचेत करना उनके सशक्तीकरण के उपाय सुझाना उन्हें आत्मनिर्भर बनाने हेतु विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण आदि कार्यक्रम संचालित करना।

- उत्पादनोन्मुखी कार्यक्रम उन्नत कृषि के तरीकों की जानकारी कीट व खरपतवार नियंत्रण भूमि परिक्षण एवं उपजाऊपन की देखभाल कृषि यंत्रों की देखभाल सहकारी समितियों के सुदृढ़ीकरण और उनके प्रोत्साहन के लिए फार्म पशु पालन कुक्कुट पालन पशु स्वास्थ्य के बारे में सहायता एवं मार्गदर्शन कृषि तकनीकों के प्रयोग के प्रति जागरूकता पैदा करना आदि।

- अन्य गतिविधियाँ जो स्थानीय आवश्यकताओं एवं प्राथमिकताओं के आधार पर की जाएँ।

एनसीसी देश की सेकेंड लाइन ऑफ डिफेंस है। अकादमिक स्तर पर विद्यार्थियों को सैन्य प्रशिक्षण देकर राष्ट्र संकल्प की प्रेरणा देता है। एन.सी.सी. का लक्ष्य युवाओं में चरित्र निर्माण, अनुशासन, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण, साहस की भावना तथा स्वयं सेवा के आदर्शों को विकसित करना है। साथ ही सशक्त राष्ट्र के निर्माण में युवाओं में नेतृत्व गुणों का विकास करना है। राष्ट्रीय कैडेट कोर युवाओं को सशस्त्र बलों में शामिल एवं प्रेरित करने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय कैडेट कोर की यूनिट जुलाई 2023 में अनुशंसित हुई। कड़ी चयन प्रक्रिया में विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित 102 यूपी बटालियन एनसीसी गोरखपुर के प्रथम सत्र में 36 कैडेट्स का चयन किया गया। कुशल संचालन के लिए ए.एन.ओ. डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव को कैडेट्स के प्रशिक्षण एवं विविध गतिविधियों के संचालन का दायित्व प्रदान किया गया है जिनके कुशल मार्गदर्शन कैडेट्स सैन्य प्रशिक्षण का अभ्यास कर रहे हैं ।

कैडेट्स राष्ट्रीय कैडेट्स कोर के मूल संकल्प एकता और अनुशासन के साथ अखंड भारत के संकल्प को पूर्ण करने का सौभाग्य ग्रहण कर रहे है। राष्ट्रीय कैडेट कोर ने स्कूली शिक्षा से विद्यार्थियों को सैन्य सेवा के लिए तैयार करने का चुनौती पूर्ण कार्य किया है। एनसीसी का अहम लक्ष्य शिक्षा के साथ युवाओं को सैन्य अनुशासन का अभ्यास कराके देश की रक्षार्थ प्रेरणा देना है।

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) भारतीय सैन्य कैडेट कोर है जिसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। यह एक स्वैच्छिक संस्था है जो पूरे भारत के स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों से कैडेटों की भर्ती करती है। कैडेटों को परेड एवं छोटे हथियार चलाने का बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण दिया जाता है। अधिकारियों और कैडेटों को पाठ्यक्रम पूरा करने पर सक्रिय सैन्य सेवा में जाने की कोई बाध्यता नहीं होती है, किन्तु एनसीसी के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों के आधार पर उन्हें चयन के समय सामान्य अभ्यर्थियों की अपेक्षा वरीयता दी जाती है।

राष्ट्रीय कैडेट कोर थल सेना, नौसेना और वायुसेना के सम्मिलन वाला एक त्रिसेवा संगठन है जो देश के युवाओं को संवार कर अनुशासित और देशभक्त नागरिकों में ढाल देता है। एनसीसी की उत्पत्ति को यूनिवर्सिटी कोर के साथ जोड़ा जा सकता है जिसकी स्थापना भारतीय रक्षा अधिनियम 1917 के तहत थल सेना में सैनिकों की कमी को पूरा करने के लिए की गई थी। 1920 में जब भारतीय प्रादेशिक अधिनियम पारित किया गया तो इस यूनिवर्सिटी कोर को यूनिवर्सिटी ट्रेनिंग कोर (UTC) में बदल दिया गया। इसका उद्देश्य यूटीसी की स्थिति सुधारना और इसे युवाओं के लिए अधिक आकर्षक बनाना था। यूटीसी अधिकारी और कैडेट सेना जैसी वर्दी पहनते थे। यह सशस्त्र सेनाओं के भारतीयकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। 1942 में यूटीसी का नाम बदलकर यूनिवर्सिटी ऑफिसर्स ट्रेनिंग कोर (UOTC) रखा गया।

एनसीसी भारत में नेशनल कैडेट कोर एक्ट, 1948 द्वारा गठित किया गया। इसकी स्थापना 15 जुलाई, 1948 को हुई। एनसीसी को यूओटीसी का उत्तराधिकारी माना जा सकता है जिसकी स्थापना ब्रिटिश सरकार द्वारा 1942 में की गई थी। स्वतंत्र भारत में युद्ध और शांति के समय युवाओं को सैन्य अकादमिक

प्रशिक्षण देकर राष्ट्र सेवा के लिए संकल्पित करना था। पंडित हृदयनाथ कुंजरू की अध्यक्षता में स्कूलों व कॉलेजों में राष्ट्रीय स्तर के एक कैडेट संगठन की स्थापना की सिफारिश की। 15 जुलाई, 1948 को राष्ट्रीय कैडेट कोर एक्ट गवर्नर जनरल द्वारा स्वीकार कर लिया गया और इसके साथ ही राष्ट्रीय कैडेट कोर अस्तित्व में आया।

पाकिस्तान के साथ 1965 और 1971 के युद्धों में एनसीसी कैडेट रक्षा की दूसरी पंक्ति में थे। उन्होंने आयुध निर्माणियों की मदद के लिए शिविर आयोजित किये, युद्धस्थल पर हथियार और गोला–बारूद पहुँचाए और शत्रु सेना के पैराट्रूपर्स को पकड़ने वाले गश्ती दलों की तरह कार्य किया। एनसीसी कैडेटों ने नागरिक सुरक्षा अधिकारियों के साथ कधे से कंधा मिलाकर कार्य किया और सक्रिय रूप से बचाव कार्य और यातायात नियंत्रण में भाग लिया। 1965 और 1971 के भारत.पाक युद्धों के पश्चात एनसीसी के पाठ्यक्रम में संशोधन किये गए। केवल रक्षा की द्वितीय पंक्ति होने के बजाय अब इसमें नेतृत्व के गुणों और अधिकारियों जैसे गुणों के विकास पर अधिक बल दिया जाने लगा।

कोर की शुरुआत वरिष्ठ वर्ग के 32.500 और कनिष्ठ वर्ग के 1,35,000 कैडेटों के साथ हुई थी। तब से यह बहुत तेजी से बढ़ी है और अधिकृत कैडेट संख्या अब 1420 लाख तक पहुँच चुकी है। हालांकि यह संख्या अपने आप में काफी महत्वपूर्ण है, फिर भी यह देश के भर्ती योग्य विद्यार्थियों की संख्या का लगभग केवल 3.5 प्रतिशत ही है। एनसीसी की 814 इकाइयों का जाल 4829 कॉलेजों और 12545 विद्यालयों द्वारा संपूर्ण भारत में फैला हुआ है।

एनसीसी को अंतर्सेवा छवि तब प्राप्त हुई जब 1950 में इसमें वायु स्कंध और 1952 में नौसेना स्कंध को भी जोड़ा गया। स्कूल के विद्यार्थियों (कनिष्ठ वर्ग) को प्राथमिक सैन्य प्रशिक्षण दिया जाता था जबकि कॉलेज के विद्यार्थियों (वरिष्ठ वर्ग) को सशस्त्र सेना के संभावित अधिकारी के रूप में प्रशिक्षित किया जाता था। इस प्रयोजन हेतु आर्मर्ड कोर, आर्टिलरी, इजीनियर्स, सिग्नल्स, इफैंटरी और मेडिकल कोर की इकाइयों की स्थापना एनसीसी में की गई।

1960 तक, संपूर्ण भारत के स्कूल–कॉलेजों में एनसीसी की इकाइयों की माँग बहुत बढ़ गई थी। इस बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय कैडेट कोर राइफल्स (NCCR) की स्थापना की गई। 1962 के चीन के आक्रमण के बाद संपूर्ण देश में एनसीसी को अनिवार्य बना देने की माँग उठी। फलस्वरूप 1963 में कॉलेज के प्रथम तीन वर्षों में 16 से 25 वर्ष की आयु के सभी सक्षम शरीर वाले युवाओं के लिए एनसीसी प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया गया।

1986 में भारत सरकार ने थपन समिति को एनसीसी के लक्ष्यों और उद्देश्यों के संदर्भ में इसके कामकाज का पुर्नमूल्यांकन करने के आदेश दिये। लेफ्टिनेंटे जनरल (रिटायर्ड) एम. एल. थपन (PVC) की अध्यक्षता वाली इस समिति ने अपनी रिपोर्ट जून, 1988 में पेश की। थपन समिति के सुझावों के अनुरूप सरकार ने 1992 में एनसीसी के लक्ष्यों को संशोधित रूप में अनुमोदित किया। जो निम्नवत है–

(i) देश के युवाओं में चरित्र, साहस, भाई–चारे, अनुशासन, नेतृत्व धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण, साहसिक अभियानो, खेल भावना और निःस्वार्थ सेवा के आदर्शों एवं गुणों का विकास करना जिससे कि वे उपयोगी नागरिक बन सकें।

(ii) संगठित, प्रशिक्षित और प्रेरित युवाओं के एक मानव संसाधन का निर्माण करना जो कि सशस्त्र बलों के साथ.साथ जीवन के सभी क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान कर सके और हमेशा देश की सेवा के लिए तत्पर रहें।

रक्षा मंत्रालय द्वारा मार्च 2001 में अनुमोदित किये गए एनसीसी के लक्ष्य इस प्रकार है (1) देश के युवाओं के चरित्र भाई–चारे अनुशासन, नेतृत्व धर्म–निरपेक्षता के दृष्टिकोण साहसिक अभियानों में रुचि खेल भावना और निःस्वार्थ सेवा भाव को विकसित करना।

(iii) संगठित प्रशिक्षित और प्रेरित युवाओं के एक मानव संसाधन का निर्माण करना जो जीवन के सभी क्षेत्र नेतृत्व प्रदान कर सके और देशसेवा के लिए तत्पर रहें।

(iv)सशस्त्र बलों में अपना कैरियर शुरू करने के लिए युवाओं को प्रेरित करने के से तैयार करना।

एनसीसी का आदर्श वाक्य (Motto)

एकता और अनुशासन (Unity and Discipline)

महानिदेशक के चार आधारभूत सिद्धांत :

1. मुस्कान के साथ आज्ञापालन करो
2. समयनिष्ठ रहो
3. निःसंकोच कठिन परिश्रम करो
4. बहाने मत बनाओ और झूठ मत बोलो

एनसीसी के वर्तमान लक्ष्य :

1. देश के युवाओं के चरित्र, भाई–चारे, अनुशासन, नेतृत्व, धर्म–निरपेक्षता के दृष्टिकोण, साहसिक अभियान में रूचि खेल भावना और निःस्वार्थ सेवा भाव को विकसित करना।
2. संगठित प्रशिक्षित और प्रेरित युवाओं के एक मानव संसाधन का निर्माण करना जो जीवन के सभी क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान कर सके और हमेशा देश सेवा के लिए समर्पित रहें।

शपथ : ''मैं सत्यनिष्ठा से लेता/लेती हूँ कि पूरी सच्चाई और श्रद्धा से अपनी मातृभूमि की सेवा करूँगा/करूँगी और एनसीसी के सभी नियमों और अधिनियमों का पालन करूगाँ/करूँगी। इसके अलावा, अपने कमांडिंग ऑफिसर के आदेश और नियंत्रण के अनुसार प्रत्येक परेड और कैम्प में पूरी शक्ति के साथ हिस्सा लूंगा/लूंगी।''

प्रतिज्ञा : हम राष्ट्रीय कैडेट कोर के कैडेट बड़े सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि हमेशा भारत की एकता को बनाए रखेंगे। हम संकल्प करते हैं कि हम भारत के अनुशासित और जिम्मेदार नागरिक बनेंगे। हम अपने साथी जीवों के हित में निःस्वार्थ भाव से सामुदायिक सेवा करेंगे।

अंतराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस : शपथ ग्रहण समारोह

राष्ट्रीय सेवा योजना

विश्वविद्यालय में अंतराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर प्लास्टिक का प्रयोग न करने की शपथ लेते स्वयंसेवक

दिनांक : 03 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने अंतराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर विश्वविद्यालय परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया गया। संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान में सहायक आचार्य डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा की वैश्विक स्तर पर प्लास्टिक मुक्त दुनिया की कल्पना गंभीर चुनौती है। जन– जन को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में अपने दैनिक दिनचर्या से कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा।

विद्यार्थियों को प्लास्टिक के वैश्विक प्रभाव पर चिंतन करने की प्रेरणा देते हुए डॉ. संदीप ने कहा की प्लास्टिक ने घर आंगन में अपनी जगह बना लिया है। पर्यावरण और जीवन के लिए प्लास्टिक गंभीर खतरा बन गया है, प्लास्टिक का विघटन होने में सैकड़ों वर्षो का समय लग जाता है। माइक्रोप्लास्टिक न केवल समुद्रीय जल जीवों को प्रभावित कर रहे है बल्कि हमारे खाद्य पदार्थो से हमारे जीवन को भी रोग ग्रस्त कर रहा है। वैकल्पिक व्यवस्था में हमे कपड़े, जुट और अन्य वेस्ट मैट्रियल से बने उत्पादों का प्रयोग करने के लिए सभी को प्रेरित करना चाहिए।

व्याख्यान में राष्ट्रीय सेवा योजना के आर्यभट्ट इकाई के कार्यक्रम अधिकारी श्री धनंजय पांडेय ने कहा की वैश्विक स्तर पर प्लास्टिक मुक्त विश्व के लिए पर्यावरण के अनुकूल विकल्पो की तलाश कर व्यापक स्तर पर प्रभावी नीति का क्रियान्वयन ही प्लास्टिक मुक्त भविष्य की कुंजी है। प्लास्टिक से मुक्ति के लिए छोटे–छोटे प्रयास से इस ज्वलंत विषय जड़ से उखाड़ा जा सकता है। जिसके लिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर को स्वच्छ और प्लास्टिक मुक्त करने के लिए विद्यार्थियों के साथ व्यापक मुहिम चला रहा है।

प्राथमिक स्तर पर प्लास्टिक की बोतल की जगह स्टील या तांबे के बोतल प्रयोग करने के अपील किया जा रहा है। साथ ही परिसर में प्लास्टिक को प्रतिबंधित करने का भी प्रयास किया जा रहा है। जिसमे राष्ट्रीय कैडेट कोर और राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवक प्लास्टिक मुक्त परिसर का समर्थन कर रहे हैं।

सहायक आचार्य डॉ. प्रेरणा अदिति ने कहा की प्लास्टिक बैग फ्री डे की शुरुआत 2009 में जीरो वेस्ट यूरोप द्वारा किया गया। प्लास्टिक बैग पाबंदी लगाने के उद्देश्य से इस मुहिम की पहल किया गया था। सिंगल यूज प्लास्टिक से बनी वस्तुओं से महासागर, नदियां और झीलों का जल दूषित नही हो रहा है बल्कि जलीय जीव भी प्रभावित हो रहे है। जिस गाय को हम मां कहते है उसे कचरे में प्लास्टिक परोस कर मौत से जूझने पर विवश कर रहे हैं। इसके लिए घर आंगन से कपास, जुट और पेपर बैग का प्रयोग कर प्लास्टिक से विश्व को मुक्त करने में अपना सहयोग कर सकते है।

प्लास्टिक की थैलियाँ, बोतलें और अन्य प्लास्टिक सामग्री हमारे समुद्रों में जा पहुँचती हैं और समुद्री जीवन के लिए जानलेवा साबित होती हैं। प्रत्येक वर्ष लाखों समुद्री जीव प्लास्टिक के कचरे के कारण मर जाते हैं। इसके अलावा प्लास्टिक का जलना भी विषैले रसायनों का करता है, जो वायु और जल को प्रदूषित करता है और हमारे स्वास्थ्य के लिए खतरा बनता है। अंतराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस पर सामूहिक शपथ ग्रहण कर स्वच्छ वसुंधरा का सभी ने संकल्प लिया।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से डॉ. अमित दूबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, श्री अनिल कुमार मिश्रा,डॉ. पवन कुमार कनौजिया, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. विकास यादव, एनसीसी सार्जेंट खुशी गुप्ता, दरख्शा बानो, चांदनी निषाद, खुशी यादव, प्रीति शर्मा,अमृता कन्नौजिया, अस्मिता सिंह, आदर्श मौर्य, हर्यश्व कुमार साहनी, अभिषेक चौरसिया, सीनियर अंडर ऑफिसर सागर जायसवाल, अनुभव, प्रियेश राम त्रिपाठी, भानु प्रताप सिंह, अंडर ऑफिसर मोती लाल, पूजा सिंह, श्रद्धा उपाध्याय, आंचल पाठक, आशुतोष सिंह सहित कृषि विभाग और फार्मेशी के विद्यार्थी भारी संख्या में उपस्थित रहें।

राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ

(उच्च शिक्षा विभाग) उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ

राष्ट्रीय सेवा योजना

युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय

के तत्वावधान में

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

साइबर जागरूकता कार्यशाला (ऑनलाइन)

तिथि : 04 जुलाई, 2024, दिन-गुरुवार,

आषाद, कृष्ण, त्रयोदशी, वि.सं. 2081

समय : सायं 04:00 से 05:00

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर – 273007 (उ.प्र.)

mguniversitygkp@mgug.ac.in

www.mgug.ac.in

दिनांक : 05 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ, उच्च शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ, (राष्ट्रीय सेवा योजना) युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वाधान में एक **'साइबर जागरूकता कार्यशाला** (ऑनलाइन माध्यम) में आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल बाजपेई मुख्य अतिथि विशेष कार्यधिकारी एवं राज्य संपर्क अधिकारी राष्टीय सेवा योजना उत्तर प्रदेश शासन डॉ. मंजू सिंह विशिष्ठ अतिथि श्री समरदीप सक्सेना युवा अधिकारी, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार उपस्थति थे। वेबनार के प्रारम्भ में राष्टीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने सभी का कार्यशाला में स्वागत किया एवं इस कार्यशाला के उद्देश्य से सभी को परिचित कराया उसके उपरांत डॉ. मंजू सिंह ने सभी को साइबर क्राइम से हो रहे अपराध एवं इससे बचने तथा किसी पीडिता की किस प्रकार से गृह मंत्रालय द्वारा बनायी गयी राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल के माध्यम से मदद कर सकते हैं आज हम आधुनिक टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने के कारण साइबर सुरक्षा हम सभी के लिय वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग बन गया है आज महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के इस कार्यशाला से हम उत्तर प्रदेश में साइबर जागरूकता अभियान की शुरआत कर रहे है अब पूरे प्रदेश में राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े संस्थान में लगातार 100 साइबर जागरूकता अभियान कार्यशाला करायी जायेगी। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति जी ने कहा हम आपको विश्वास दिलाते है कि साइबर क्राइम से बचाव या समाज सेवा का कोई भी कार्य होगा। यह विश्वविद्यालय हमेशा पंक्ति में प्रथम स्थान पर खड़ा मिलेगा। हम सभी साइबर स्वच्छ प्रथाओं का पालन करें और साइबर क्राइम से बचें।विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव में इस आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की। अंत में डॉ. अखिलेश कुमार दुबे में सभी का धन्यवाद ज्ञापन कर कार्यशाला का समापन किया।

कार्यक्रम में उपकुलसचिव (प्रशासन) श्री श्रीकांत, संकायध्यक्ष डॉ. डी.एस. अजीथा, डॉ. शशिकांत सिंह, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. विकाश यादव, डॉ. कुलदीप सिंह डॉ. कीर्ति कुमार यादव, प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव, कुवर अभिनव सिंह राठोर, डॉ. अभिषेक सिंह, साध्वीनन्दन पाण्डेय, सुमन सिंह, कविता साहनी, श्री कमलनयन श्रीवास्तव, ओंकार, अनिल इत्यादि विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी सम्मिलित रहें।

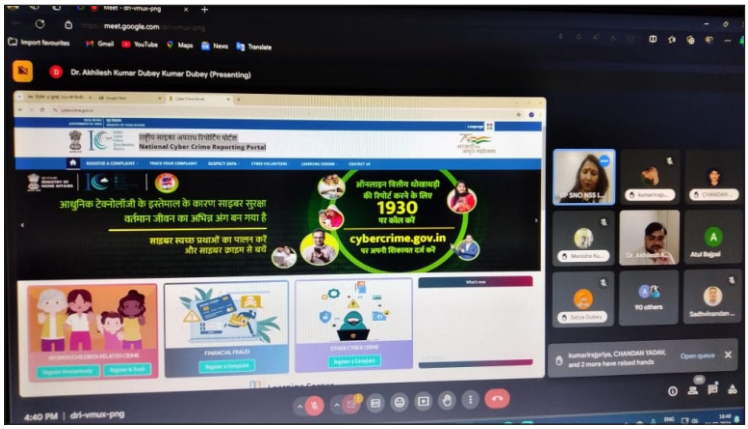

साइबर जागरूकता कार्यशाला में को सम्बोधित करते हुए डॉ. मंजू सिंह एवं विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति जी

पौधरोपण करते हुए माननीय कुलपति, कुलसचिव, नागरिक सुरक्षा कोर की टीम

दिनांक : 20 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में एक पेड़ मां के नाम पौधारोपण लक्ष्य में सात हजार पौधे लगाकर प्रदेश में 36. 50 करोड़ पौधारोपण के लक्ष्य में अपनी सहभागिता किया।

उच्च शिक्षा, वन विभाग, नागरिक सुरक्षा कोर एवं एनसीसी महानिदेशालय द्वारा निर्देशित एक पेड़ मां के नाम पर आज वृहद स्तर के पौधा रोपण लक्ष्य में कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव जी ने पौधा रोपण कर अभियान की शुरुआत किया।

पौधारोपण अभियान में कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई ने कहा कि प्रकृति के संरक्षण के लिए पौधरोपण आवश्यक हैं। पेड़ों के अंधाधुंध कटाव से धरती वृक्षहीन होती जा रही है। जन–जन को अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर कम से कम एक पौधा निश्चित रूप से लगाना चाहिए।

कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है की हम सभी मिलकर पेड़ों की घटती संख्या को बढ़ाकर पर्यावरण को बचाने में अपनी महती भूमिका सुनिश्चित करें।

इस अवसर पर राष्ट्रीय कैडेट कोर के ए.एन.ओ. डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि पेड़ प्रकृति का छाता है अगर इस छाते को हमने काट दिया तो प्रकृति की छाव से पूरी धरती वीरान और बंजर हो जाएगी। प्रकृति के प्रति हमें संवेदनशील होना होगा।

पौधारोपण अभियान में 102 यू.पी. बटालियन राष्ट्रीय कैडेट कोर, संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय, कृषि विभाग, नर्सिंग विभाग, पैरामेडिकल, फार्मेशी और आयुर्वेद कॉलेज के सभी विद्यार्थियों के साथ वृहद पौधारोपण अभियान को पूरा किया। पौधारोपण कार्यक्रम में प्रमुख रूप से डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अकिता मिश्रा, धनन्जय पाण्डेय, डॉ आशुतोष श्रीवास्तव, अनिल मिश्रा, जन्मेजय सोनी, अनिल शर्मा, कैडेट सागर जायसवाल, मोतीलाल, खुशी गुप्ता, अभिषेक चौरसिया, हरयश्व साहनी, साक्षी प्रजापति, शालिनी चौहान, शिवम सिंह, अस्मिता सिंह, श्रद्धा उपाध्याय, आंचल, खुशी, संजना आदि ने पौधारोपण में सहयोग किया।

विश्वविद्यालय में पौधरोपण करते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवक एवं राष्ट्रीय कैडेट कोर कैडेट्स

नशामुक्ति अभियान के अंतर्गत शपथ ग्रहण करते विश्वविद्यालय के विद्यार्थी

दिनांक : 20 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा नशामुक्ति अभियान के अंतर्गत शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

जिसमें कार्यक्रम अधिकारी साध्वी नन्दन पाण्डेय ने नशे से होने वाले दुष्प्रभाव एवं हानियों के बारे में सभी को बताया कि किस प्रकार हम इससे बच सकते है सभी संकाय के विद्यार्थी को शपथ ग्रहण कराकर विश्वविद्यालय नशा मुक्त रखे जाने का संकल्प लिया गया जिसकी जानकारी नशा मुक्ति नोडल अधिकारी दिलीप मिश्रा में दिया।

उन्होंने बताया कि युवा किसी भी राष्ट्र की ऊर्जा होते हैं तथा युवाओं की शक्ति का समाज एवं देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। अतः यह अति आवश्यक है कि नशामुक्त भारत अभियान में सर्वाधिक संख्या में युवा जुड़े।

देश की इस चुनौती को स्वीकार करते हुए हम आज नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत एक जुट होकर प्रतिज्ञा करते हैं कि न केवल समुदाय, परिवार, मित्र बल्कि स्वयं को भी नशामुक्त कराएँगे क्योंकि बदलाव की शुरुआत अपने आप से होनी चाहिए।

इसलिए आइए हम सब मिलकर अपने जिले गोरखपुर उत्तर प्रदेश को नशामुक्त कराने का दृढ निश्चय करें। हम सभी को प्रतिज्ञा करना होगा कि अपने देश को नशामुक्त करने के लिए अपनी क्षमता के अनुसार हर सम्भव प्रयास करेंगे।

कार्यक्रम में संकायध्यक्ष डॉ. डी. एस. अजीथा, डॉ. शशिकांत सिंह, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. विकाश यादव, डॉ. कुलदीप सिंह डॉ. कीर्ति कुमार यादव, कुंवर अभिनव सिंह राठौर, डॉ. अभिषेक सिंह, साध्वीनन्दन पाण्डेय, सुमन सिंह, कविता साहनी, कमलनयन श्रीवास्तव ओंकार, अनिल इत्यादि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक एवं विद्यार्थी सम्मिलित रहें।

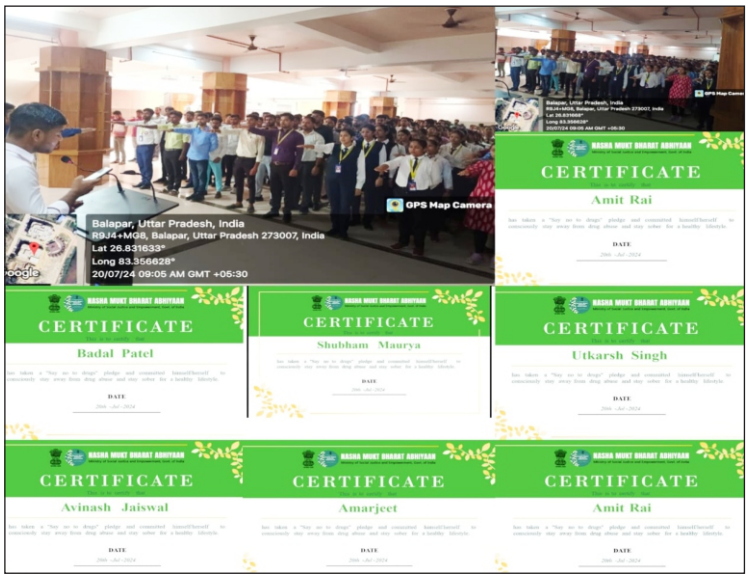

फाइलेरिया रोग उन्मुलन' : कार्यशाला

राष्ट्रीय सेवा योजना

फार्मेसी काउंसिल ऑफ इण्डिया (पीसीआई) द्वारा आयोजित 'फाइलेरिया रोग उन्मुलन' कार्यशाला

दिनांक : 16 जुलाई, 2024 को फार्मेसी काउंसिल ऑफ इण्डिया (पीसीआई) द्वारा आयोजित 'फाइलेरिया रोग उन्मुलन' विषय पर लखनऊ में राष्ट्रीय सेवा योजना के साथ एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने प्रतिभाग किया। जिसमें फाइलेरिया (हाथीपांव) रोग उन्मूलन के विषय की कार्यशाला में प्रशिक्षण से प्राप्त जानकारी को आधार बनाकर विश्वविद्यालय स्तर पर दिनांक–10 अगस्त से 02 सितंबर, 2024 तक होने वाले इस अभियान की कार्ययोजना की रूपरेखा बनाकर उसके अनुसार अपने जिलें में एवं विश्वविद्यालय स्तर पर योजना को क्रियान्वित किया जाएगा एवं विश्वविद्यालय स्तर पर सभी विद्यार्थियों को शत्–प्रतिशत् एमडीए के माध्यम से कैंप लगाकर दवा वितरित किया जाएगा।

दीक्षारंभ कार्यक्रम : व्याख्यान

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक

राष्ट्रीय सेवा योजना

दिनांक : 16–30 जुलाई, 2024 को आयोजित नवप्रवेशित विद्यार्थियों के दीक्षारंभ कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सभी संकाय के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय सेवा योजना के बारे में, उसकी कार्यप्रणाली एवं उद्देश्यों से सभी नवप्रवेशित विद्यार्थियों को राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक द्वारा प्रत्येक संकाय एवं इकाई में एक–एक व्याख्यान लेकर परिचय कराया। जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों को किस प्रकार से सेवा के माध्यम से शिक्षा देने का कार्य राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा किया जाता है जिससे उनके व्यक्तिगत विकास, शारीरिक विकास, सामाजिक विकास, मानसिक विकास के साथ–साथ उनके सर्वांगीण विकास के योगदान में सहायक होती है।

प्रत्येक इकाई के कार्यक्रम अधिकारियों द्वारा भी एक व्याख्यान दिया गया, जिसमें राष्ट्रीय सेवा योजना में किस प्रकार से आप प्रवेश प्राप्त करेंगे एवं प्रवेश के उपरान्त आपके और आपके व्यक्तित्व में किस प्रकार उन्नयन होगा इसके बारे में बताकर प्रेरित किया।

विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना प्रवेश सत्र–2024–25 में दो चरणों में किया जा रहा है, प्रथम चरण जो 16–30 जुलाई तक जिसमें नवप्रवेशित विद्यार्थियों को सर्वप्रथम प्रवेश हेतु वरियता दी जाएगी। उसके उपरान्त द्वितीय चरण 31 जुलाई से 10 अगस्त तक जिसमें शेष बचे विद्यार्थी जिनका दो वर्ष शेष है उनका प्रवेश किया जाएगा। इस दीक्षारंभ कार्यक्रम में सभी संकायों के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।

आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण

राष्ट्रीय कैडेट कोर

फार्मेसी संकाय के नवप्रवेशित विद्यार्थियों एवं राष्ट्रीय कैडेट कोर के कैडेट्स को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण देती एनडीआरएफ की टीम

दिनांक : 20 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में एनडीआरएफ के दल ने फार्मेसी विभाग के नव प्रवेशी विद्यार्थियों और एनसीसी कैडेट्स को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया।

एनडीआरफ गोरखपुर रीजनल रिस्पांस फोर्स के उप कमांडेंट श्री संतोष कुमार ने आपदा प्रबंधन पर कहा कि आए दिन होने वाली भूस्खलन, भूकंप, बाढ़ आदि इमरजेंसी के समय लोग भयभीत हो जाते हैं, जिससे उन्हें शारीरिक हानि उठानी पड़ती है। एनडीआरएफ के जवानों ने लोगों को आपदा के समय घायलों को बिना संसाधनों के किस प्रकार प्राथमिक उपचार, अस्पताल ले जाने के लिए एक capacity building program (कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम) के जरिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग के छात्र–छात्राओं को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया साथ ही में बाढ़ के दौरान किन–किन उपकरणों का प्रयोग कर लोगो को कैसे बचाया जा सके। यह भी बारीकी से समझाया।

इसमें आग जैसी आपदाओं में घायल हुए व्यक्तियों को अस्पताल से पूर्व चिकित्सा के बारे में बताया गया और साथ ही आपदाओं में प्रयोग किए जाने वाले रेस्क्यू तकनीकी फंसे हुए लोगों को निकालना उन्हें प्राथमिक उपचार देने के बारे में बताया गया।

देश के कई हिस्सों में आ रही आपदाओं को ध्यान में रखते हुए सरकार ने लोगों को आपदाओं से बचने और सुरक्षा को लेकर लोगो को जागरूक किया जा रहा है एनडीआरएफ टीम के सदस्यों ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम कॉलेज के स्टूडेंट को बचाव और सुरक्षा के टिप्स दिए। 11वीं वाहिनी राष्ट्रीय आपदा मोचन बल के उपमहानिरीक्षक श्री मनोज कुमार शर्मा, निरीक्षक दीपक मंडल उप निरीक्षक कुलदीप कुमार एवं अन्य रेस्क्यूर मौजूद रहें। फार्मेशी प्राचार्य डॉ. शशिकांत सिंह ने अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया।

कार्यक्रम की भूमिका और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने किया।

कारगिल विजय दिवस : प्रतियोगिता

राष्ट्रीय कैडेट कोर

कारगिल विजय दिवस पर प्रजेंटेशन प्रस्तुत करती कैडेट

दिनांक : 26 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय 102 यू.पी. बटालियन एन.सी.सी.यूनिट के कैडेट्स द्वारा कारगिल विजय दिवस के 25वें वर्ष (रजत जयंती) पर कारगिल युद्ध दृश्यम को पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता दिखाकर वीर योद्धाओं को नमन किया गया। प्रतियोगिता से पूर्व सभी कैडेट्स ने शहीदों के नाम पर दीप जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित किया।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील सिंह ने कहा कि आपरेशन विजय भारतीय शौर्य पराक्रम, त्याग बलिदान को समर्पित है। 26 जुलाई को प्रतिवर्ष मनाएं जाने वाले कारगिल युद्ध में पाकिस्तान पर भारत की जीत की याद दिलाता है। आज ही के दिन भारतीय सेना के जवानों ने टाइगर हिल पर तिरंगा फहराकर पाकिस्तान को हराया था।

84 दिनों तक चले इस युद्ध में भारतीय सेना के 527 जवान शहीद हुए थे जबकि 1363 घायल हुए थे। इस युद्ध का नेतृत्व कैप्टन विक्रम बत्रा कर रहे थे। उन्हें उनके साहस के लिए मरणोपरांत भारत के

सबसे प्रतिष्ठित और सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। भारतीय वीरों के त्याग, बलिदान, साहस और शौर्य को हमेशा याद रखा जाएगा।

एन.सी.सी. अधिकारी डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि आज का दिन ऐतिहासिक है। कारगिल विजय दिवस भारत की एकता, अखंडता और प्रभुता की पहचान कराता है। हमें अपने कर्म क्षेत्र में डटे रहने की सीख भी देता है।

पाकिस्तानी सेना ने भारतीय सीमा के अंदर घुसपैठ करके महत्वपूर्ण ऊँचाइयों पर कब्जा कर लिया था। कारगिल युद्ध भारतीय सेना के लिए एक बड़ी चुनौती थी। यह क्षेत्र अत्यंत दुर्गम था और ऊँचाइयों पर लड़ाई लड़ने के लिए विशेष तैयारी की आवश्यकता थी। भारतीय सेना ने स्थिति को संभालने के लिए 'ऑपरेशन विजय' शुरू किया।

20 जून 1999 को भारतीय सेना ने टोलोलिंग की ऊँचाइयों को पुनः प्राप्त किया और 26 जुलाई 1999 को भारत ने अंतिम विजय प्राप्त की। जिसे हम 'कारगिल विजय दिवस' के रूप में मनाते हैं।

कारगिल युद्ध में भारतीय सेना के कई जवानों ने अपने प्राणों की आहुति दी। पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता में कैडेट श्रद्धा उपाध्याय, खुशी गुप्ता, सागर जायसवाल, पूजा सिंह, सागर जायसवाल भाषण प्रतियोगिता में, श्रद्धा उपाध्याय, आंचल पाठक, अश्मिता सिंह ने प्रतिभाग किया।

निर्णायक डॉ. पवन कनौजिया एवं डॉ. अंकिता मिश्रा ने तकनीकी आधार पर प्रतियोगिता का मूल्यांकन किया। आयोजन में प्रमुख रूप से डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. अमित दूबे, डॉ. धीरेंद्र, डॉ. प्रेरणा अदिति, धनंजय पांडेय, अनिल मिश्रा, कैडेट मोतीलाल, प्रीति शर्मा, आशुतोष मणि त्रिपाठी, सागर यादव, चांदनी निषाद आदि उपस्थित रहें।

व्याख्यान

राष्ट्रीय कैडेट कोर

दीक्षारंभ के दौरान विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव

दिनांक : 29 जुलाई, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में कृषि विभाग में नव प्रवेशी विद्यार्थियों को राष्ट्रीय कैडेट कोर के मूल उद्देश्यों, सैन्य सेवा में रोजगार के अवसर पर व्याख्यान देते हुए एनसीसी अधिकारी डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि एनसीसी कैडेट्स के लिए रक्षा क्षेत्र में रोजगार की अनंत संभावनाएं है।

सैन्य सेवा के लिए ऊंचा लक्ष्य, जुनून, अनुशासन, आत्मविश्वास और समय का पाबंद होना मूल मंत्र हैं। कैडेट्स अभी से अपने जीवन के लक्ष्य के प्रति सजग और जागरूक रहें। लक्ष्य के प्रति सदैव तत्पर रहे, आपकी उत्सुकता ही आपको जीवन में लक्ष्य के प्रेरित करेगा। कहावत है कि रोम एक दिन में नही बना था। इजराइल में हर नागरिक को 5 वर्ष फौज में नौकरी करना अनिवार्य है। भारत में थल सेना, वायु और जल सेना के विविध विंग्स में ढेर सारे द्वार खुले हुए है आप सैन्य सेवा से राष्ट्र सेवा का संकल्प लें।

राष्ट्रीय कैडेट कोर अनुशासन, और सामाजिक सेवा के मूल्यों को आत्मसात करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। एनसीसी न केवल छात्रों को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाता है, बल्कि उन्हें राष्ट्र सेवा संकल्प की प्रेरणा भी देता है ।

102 यू.पी. बटालियन के एनसीसी अधिकारी डॉ. संदीप श्रीवास्तव ने विद्यार्थियों को एनसीसी में आने के प्रेरित करते हुए कहा कि एनसीसी युवाओं के लिए एक समग्र विकास कार्यक्रम है जो आपको न केवल शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाता है, बल्कि जीवन में रोजगार के लिए भी तैयार करता है।

एनसीसी की स्थापना 1948 में की गई थी और इसका उद्देश्य युवाओं में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और देशभक्ति का विकास करना है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत, कैडेट्स को सैन्य प्रशिक्षण, साहसिक गतिविधियाँ, और सामुदायिक सेवा के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। एनसीसी कैडेट्स के लिए विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार की व्यापक संभावनाएं हैं, जो उनकी व्यक्तिगत और पेशेवर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। एनसीसी का अनुभव युवाओं को नेतृत्व, अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना सिखाता है, जो उन्हें भविष्य में विभिन्न पेशेवर और सामाजिक क्षेत्रों में सफल होने में मदद करता है।

एनसीसी कैडेट्स को राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सेवा और देश के लिए समर्पित भावना को बढ़ावा देता है। जिससे नेतृत्व, टीमवर्क और विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष के लिए तैयार रह कर कार्य को पूर्ण करने की प्रेरणा देता हैं।

एनसीसी सैन्य अनुशासन और साहसिक प्रशिक्षण की प्रेरणा देता है। एनसीसी प्रशिक्षण न केवल आपको जीवन में एक अधिक अनुशासित और जिम्मेदार व्यक्ति बनाता है बल्कि आपके

व्यक्तित्व, चरित्र एवं गुण का भी विकास करता है। इसमें शारीरिक, शस्त्र क्षेत्र एवं युद्ध कला आत्मरक्षा तथा साहसिक प्रशिक्षण के साथ कैडेट्स को जीवन के किसी भी परिस्थिति और चुनौतियों का सामना करने का संकल्प भी देता है। राष्ट्रीय कैडेट कोर ने स्कूली शिक्षा से विद्यार्थियों को सैन्य सेवा के लिए तैयार करने का चुनौती पूर्ण कार्य किया है।

कैडेट्स सैन्य सेवा के लिए एनडीए, आईएमए, नेवल एक्डेमी, शॉट्स सर्विस कमीशन टेक्निकल ग्रेजुकेशन कोर्स, आर्मी कैडेट कॉलेज, टेरीटोरल आर्मी, आर्मी मेडिकल कोर्प्स, आर्मी पोस्टल सर्विस, एनसीसी स्पेशल एंट्री स्कीम, आईटीबीटी, सीआरपीएफ, सीआईएसएफ, आदि में कैडेट्स को सुनहरा मौका मिलता है।

कैडेट्स एकता और अनुशासन के साथ अखंड भारत के संकल्प को पूर्ण करने के लिए सैन्य सेवा में अपने जीवन को समर्पित करेंगे। एनसीसी एकता के साथ कार्य करते हुए युवाओं में चरित्र निर्माण, अनुशासन, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण, साहस की भावना तथा स्वयं सेवा के आदर्शों को विकसित करती है।

सरहदों की रक्षा के लिए कैडेट्स को तैयार करना एनसीसी का अहम लक्ष्य है। शिक्षा के साथ सैन्य अनुशासन का अभ्यास देश की रक्षार्थ प्रेरणा देता है।

नेशनल कैडेट कोर भारतीय युवा में राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता, सेवा भावना और सैन्य नौकरियों के प्रति उत्साह को बढ़ाने का काम करता है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों और छात्राओं में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहित करना है।

एनसीसी का प्रमुख लक्ष्य युवा पीढ़ी को सैन्य जीवन के महत्त्वपूर्ण तत्वों की समझ और समर्थन प्रदान करना है, जो उन्हें देश सेवा के क्षेत्र में उनके योगदान को बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। एनसीसी में छात्रों को सैन्य तकनीकों, संरचना और संगठन की जानकारी प्रदान करता है।

सैन्य शिक्षा उन्हें युद्ध क्षेत्र में नियमितता, संगठन और विश्वास को विकसित करने में मदद करती है। इसके अलावा, यह छात्रों को समर्थ बनाता है कि वे आपात स्थितियों में ठीक तरीके से कैसे प्रतिक्रिया करें और सैन्य तैयारी में उनकी क्षमता को बढ़ा सकते है। राष्ट्रीय कैडेट कोर अनुशासन, और सामाजिक सेवा के मूल्यों को आत्मसात करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

एनसीसी राष्ट्र निर्माण में जाति, धर्म, संस्कृति के भाव से ऊपर उठकर एकता और अनुशासन के भाव से एक श्रेष्ठ नागरिक होने का जज्बा जाग्रत करती है।

डॉ. संदीप श्रीवास्तव ने कहा कि शस्त्र शिक्षा भी एनसीसी का एक अहम हिस्सा है, प्रशिक्षित उस्तादो द्वारा कैडेट्स को शस्त्रों का सही तरीके से प्रयोग करने की कला सिखाया जाता है। यह उन्हें शस्त्रों के प्रकार, उपयोग और सुरक्षा के नियमों की समझ दिलाता है, जो उन्हें स्वयं की सुरक्षा और अन्यों की सहायता करने में मदद करता है। इसके अलावा, शस्त्र शिक्षा कैडेट्स को सशक्त बनाती है। कैडेट्स को मैप रीडिंग और नेविगेशन की जानकारी भी एक महत्वपूर्ण कौशल है जो एनसीसी के माध्यम से सिखाया जाता है। मैप रीडिंग और नेविगेशन का ज्ञान छात्रों को युद्ध क्षेत्र में निर्देशित करने में मदद करता है और उन्हें अनजान या अज्ञात क्षेत्रों में सुरक्षित रहने में सहायक होता है।

राष्ट्रीय कैडेट कोर भारत में एक युवा विकास कार्यक्रम है। एनसीसी में प्रशिक्षित युवाओं के लिए विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाएं हैं, जिनमें सशस्त्र बलए अर्धसैनिक बल, पुलिस सेवा और निजी क्षेत्र शामिल हैं। नीचे विभिन्न क्षेत्रों में एनसीसी कैडेट्स के लिए सशस्त्र बलों में एनसीसी कैडेट्स को भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना में नौकरी प्राप्त करने के लिए प्राथमिकता दी जाती है। एनसीसी 'सी' प्रमाण पत्र धारक उम्मीदवारों को साक्षात्कार में सीधे बुलाया जाता है और उन्हें लिखित परीक्षा से छूट मिलती है।

इसके अतिरिक्त, एनसीसी विशेष प्रविष्टि योजना (NCC Special Entry Scheme) के तहत उन्हें नियमित भर्ती प्रक्रियाओं में अतिरिक्त लाभ मिलते हैं।

एनसीसी कैडेट्स को अर्धसैनिक बलों जैसे कि सीआरपीएफ, बीएसएफ, आईटीबीपी और अन्य में भी भर्ती हो सकते हैं। इन बलों में एनसीसी प्रशिक्षण को एक अतिरिक्त योग्यता के रूप में देखा जाता है और कैडेट्स को पुलिस सेवा प्राथमिकता दिया जाता है।

एनसीसी कैडेट्स के लिए पुलिस सेवाओं में भी अवसर होते हैं। पुलिस भर्ती में, एनसीसी 'सी' प्रमाण पत्र धारक उम्मीदवारों को बोनस अंक दिए जाते हैं। एनसीसी प्रशिक्षण पुलिस विभाग के लिए उपयोगी होता है क्योंकि यह उम्मीदवारों को अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, और सामुदायिक सेवा का अनुभव प्रदान करता है।

निजी क्षेत्र में भी एनसीसी कैडेट्स की मांग है विशेष रूप से उन नौकरियों में जहां नेतृत्व, टीमवर्क और अनुशासन की आवश्यकता होती है। एनसीसी का अनुभव व्यक्तियों को प्रबंधन, सुरक्षा और मानव संसाधन क्षेत्रों में आकर्षक करियर विकल्प प्रदान करता है।

सामुदायिक सेवा और सामाजिक क्षेत्र एनसीसी कैडेट्स को सामुदायिक सेवा और गैर–लाभकारी संगठनों में भी रोजगार के अवसर मिल सकते हैं।

एनसीसी कार्यक्रम के अंतर्गत कैडेट्स नेत्रदान, रक्तदान और अन्य सामुदायिक सेवाओं में भाग लेते हैं, जिससे उन्हें सामाजिक सेवाओं के क्षेत्र में करियर बनाने में मदद मिलती है। खेल और साहसिक गतिविधियों में भी रोजगार है। एनसीसी के अंतर्गत, कैडेट्स को विभिन्न खेलों और साहसिक गतिविधियों में प्रशिक्षण मिलता है, जैसे कि पर्वतारोहण, ट्रेकिंग और नौकायन।

इन क्षेत्रों में करियर बनाने के लिए एनसीसी का अनुभव सहायक होता है। एनसीसी कैडेट्स शिक्षण और प्रशिक्षण के क्षेत्र में भी करियर बना सकते हैं। एनसीसी के तहत मिले अनुभव और प्रशिक्षण से वे विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षक, प्रशिक्षक, या खेल कोच के रूप में काम कर सकते हैं।

15 दिवसीय दीक्षारंभ में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के एनसीसी अधिकारी डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडीकल विभाग, संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय, फैकल्टी ऑफ फार्मास्यूटिकल विज्ञान विभाग के नव प्रवेशी विद्यार्थियों को एनसीसी के महत्व और सैन्य सेवा में रोजगार के भविष्य और संभावना पर मार्गदर्शन किया।

नव प्रवेशी विद्यार्थियों को एनसीसी में नामांकन के लिए प्रोत्साहित करते हुए एनसीसी अधिकारी डॉ. संदीप श्रीवास्तव ने राष्ट्रीय कैडेट कोर के माध्यम से सैन्य सेवा करने की प्रेरणा दिया।

भारतीय सेना के शौर्य पराक्रम को समर्पित आपरेशन विजय : कारगिल युद्ध

सागर जायसवाल
सिनियर अण्डर ऑफिसर

कारगिल युद्ध भारतीय सेना के शौर्य पराक्रम, साहस, वीरता और संकल्प का प्रतीक है। ऑपरेशन विजय ने यह साबित कर दिया कि भारतीय सशस्त्र बल किसी भी चुनौती का सामना करने में सक्षम हैं। इस युद्ध ने भारतीय जनता के मनोबल को भी मजबूत किया और राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा दिया। कारगिल विजय दिवस हमें उन वीर जवानों की याद दिलाता है जिन्होंने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

कारगिल युद्ध, जिसे ऑपरेशन विजय के नाम से भी जाना जाता है, 1999 में भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर के कारगिल जिले में लड़ा गया था। यह संघर्ष मई से जुलाई 1999 तक चला और इसमें भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान द्वारा कारगिल की ऊँचाइयों पर किए गए घुसपैठ का सफलतापूर्वक जवाब दिया। इस युद्ध ने न केवल सैन्य इतिहास में बल्कि दोनों देशों के संबंधों में भी महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।

1947 में भारत और पाकिस्तान के बीच विभाजन के बाद से कश्मीर विवाद का केंद्र बिंदु बना रहा। 1947–48 और 1965 में दोनों देशों के बीच कश्मीर पर पहले से ही युद्ध हो चुका था। 1971 में भी दोनों देशों के बीच एक बड़ा युद्ध हुआ, लेकिन यह मुख्यतः पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) की स्वतंत्रता को लेकर था। 1980 और 1990 के दशक में कश्मीर में उग्रवाद बढ़ा, जिसने दोनों देशों के बीच तनाव को और बढ़ा दिया।

1999 की शुरुआत में, पाकिस्तान ने कारगिल क्षेत्र में भारतीय नियंत्रण वाले क्षेत्र में घुसपैठ की योजना बनाई। पाकिस्तानी सेना और अर्धसैनिक बलों ने कारगिल की ऊँचाइयों पर गुप्त रूप से कब्जा कर लिया और वहाँ से श्रीनगर–लेह राष्ट्रीय राजमार्ग पर नियंत्रण करने की कोशिश की। इसका उद्देश्य कश्मीर में भारतीय सशस्त्र बलों की आवाजाही को बाधित करना था।

भारतीय सेना ने मई 1999 में इन घुसपैठों का पता लगाया और तुरंत ही ऑपरेशन विजय की शुरुआत की। भारतीय सशस्त्र बलों ने कारगिल की ऊँचाइयों को फिर से अपने कब्जे में लेने के लिए व्यापक अभियान चलाया। भारतीय वायुसेना ने भी ऑपरेशन सफेद सागर के तहत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें उन्होंने घुसपैठियों के ठिकानों पर सटीक हवाई हमले किए। कारगिल युद्ध में भारतीय सेना ने उच्च पर्वतीय युद्ध की अपनी रणनीति और साहस का प्रदर्शन किया। कुछ महत्वपूर्ण लड़ाइयाँ, जैसे टाइगर हिल और तोलोलिंग की लड़ाई, भारतीय सेना की वीरता का प्रतीक बनीं। भारतीय सेना ने दुर्गम परिस्थितियों और भारी बर्फबारी के बावजूद अपनी स्थिति को मजबूत किया और पाकिस्तानी घुसपैठियों को पीछे हटने पर मजबूर किया।

अंतरराष्ट्रीय दबाव और भारतीय सेना के आक्रमण के कारण पाकिस्तान ने अंततः अपने सैनिकों को पीछे हटाने का निर्णय लिया। 26 जुलाई 1999 को युद्ध समाप्त हुआ और भारतीय सेना ने सभी घुसपैठियों को खदेड़कर कारगिल क्षेत्र को पूरी तरह से सुरक्षित किया। इस दिन को अब भारत में कारगिल विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है।

कारगिल युद्ध ने भारत और पाकिस्तान के संबंधों पर गहरा असर डाला। इस युद्ध ने स्पष्ट कर दिया कि पाकिस्तान ने कारगिल में घुसपैठ की योजना बनाई थी और इसे अंजाम दिया था। इसके परिणामस्वरूप पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को धक्का लगा और उसे व्यापक आलोचना का सामना करना पड़ा।

कारगिल युद्ध में भारतीय सेना के सैनिकों ने अतुलनीय वीरता का प्रदर्शन किया। युद्ध के दौरान कई सैनिकों ने अपनी जान की बाजी लगाकर देश की रक्षा की। कैप्टन विक्रम बत्रा, लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडेए और कैप्टन अनुज नायर जैसे वीर जवानों को उनके अद्वितीय साहस के लिए मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

कारगिल युद्ध ने भारत को कई महत्वपूर्ण सबक सिखाए। इसने भारत की खुफिया एजेंसियों और सशस्त्र बलों के बीच बेहतर तालमेल और समन्वय की आवश्यकता को उजागर किया। इसके बाद भारतीय सेना ने अपनी खुफिया क्षमताओं और सीमा सुरक्षा में सुधार के लिए कई कदम उठाए। भारतीय वायुसेना ने भी अपने हवाई संचालन और तकनीकी क्षमताओं को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया।

26 जुलाई को भारत ने कारगिल युद्ध को जीत कर अपने युद्ध कौशल, नेतृत्व, शौर्य पराक्रम को समर्पित कर देश के मस्तक को बचा लिया पर भारी संख्या में वीर जवानों ने अपने प्राणों की आहुति देकर हमारे सरहद की रक्षा किया। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय राष्ट्रीय कैडेट कोर 102 यू.पी. बटालियन कारगिल युद्ध आपरेशन विजय के योद्धाओं को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर देश सेवा का संकल्प लेता है।

जय हिन्द वन्देमातरम...

महायोगी गोरखनाथ विवि को प्लास्टिक मुक्त करने का लिया गया संकल्प'

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर विश्वविद्यालय परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान में सहायक आचार्य डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि सभी लोगों को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा।

डॉ. संदीप ने कहा कि पर्यावरण और जीवन के लिए प्लास्टिक गंभीर खतरा बन गया है, प्लास्टिक का विघटन होने में सैकड़ो वर्षो का समय लग जाता है। माइक्रोप्लास्टिक न केवल समुद्रीय जल जीवों को प्रभावित कर रहे हैं बल्कि हमारे खाद्य पदार्थो से हमारे जीवन को भी रोग ग्रस्त कर रहा है। व्याख्यान में राष्ट्रीय सेवा योजना के आर्यभट्ट इकाई के कार्यक्रम अधिकारी धनंजय पांडेय ने कहा कि प्लास्टिक मुक्त विश्व के लिए पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों की तलाश कर व्यापक स्तर पर प्रभावी नीति का क्रियान्वयन ही प्लास्टिक मुक्त भविष्य की कुंजी है। सहायक आचार्य डॉ.प्रेरणा अदिति ने कहा कि घर आंगन से कपास, जूट और पेपर बैग का प्रयोग कर प्लास्टिक से विश्व को मुक्त करने में अपना सहयोग किया जा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस पर सामूहिक शपथ ग्रहण कर स्वच्छ वसुंधरा का सभी ने संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से कृषि संकाय के अधिष्ठता डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ आयुष पाठक, डॉ विकास दुबे, फार्मेशी विभाग के प्राचार्य प्रो. एसके सिंह, डॉ अमित दूबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, अनिल कुमार मिश्रा, डॉ पवन कुमार कन्नौजिया, डॉ अंकिता मिश्रा, डॉ विकास यादव आदि की सक्रिय सहभागिता रही।

महायोगी गोरखनाथ विवि को प्लास्टिक मुक्त करने का लिया गया संकल्प

मखौड़ा संदेश गोरखपुर संवाददाता।

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर विश्वविद्यालय परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान में सहायक आचार्य डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि सभी लोगों को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा। डॉ. संदीप ने कहा कि पर्यावरण और जीवन के लिए प्लास्टिक गंभीर खतरा बन गया है, प्लास्टिक का विघटन होने में सैकड़ो वर्षो का समय लग जाता है। माइक्रोप्लास्टिक न केवल समुद्रीय जल जीवों को प्रभावित कर रहे हैं बल्कि हमारे खाद्य पदार्थो से हमारे जीवन को भी रोग ग्रस्त कर रहा है। व्याख्यान में राष्ट्रीय सेवा योजना के आर्यभट्ट इकाई के कार्यक्रम अधिकारी धनंजय पांडेय ने कहा कि सभी लोगों को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा। डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि पर्यावरण और जीवन को भी रोग ग्रस्त कर रहा है। व्याख्यान में राष्ट्रीय सेवा योजना के आर्यभट्ट इकाई के कार्यक्रम अधिकारी धनंजय पांडेय ने कहा कि प्लास्टिक मुक्त विश्व के लिए पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों की तलाश कर व्यापक स्तर पर प्रभावी नीति का क्रियान्वयन ही प्लास्टिक मुक्त भविष्य की कुंजी है। सहायक आचार्य डॉ. प्रेरणा अदिति ने कहा कि घर आंगन से कपास, जूट और पेपर बैग का प्रयोग कर प्लास्टिक से विश्व को मुक्त करने में अपना सहयोग किया जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस पर सामूहिक शपथ ग्रहण कर स्वच्छ वसुंधरा का सभी ने संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से कृषि संकाय के अधिष्ठता डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ आयुष पाठक, डॉ विकास दुबे, फार्मेशी विभाग के प्राचार्य प्रो. एसके सिंह, डॉ अमित दूबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, अनिल कुमार मिश्रा, डॉ पवन कुमार कन्नौजिया, डॉ अंकिता मिश्रा, डॉ विकास यादव आदि की सक्रिय सहभागिता रही।

विवि परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प

गोरखनाथ विवि

- अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर व्याख्यान का हुआ आयोजन
- बोले वक्ता-अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं का करे प्रयोग

महायोगी गुरु गोरखनाथ विवि में पॉलीथिन मुक्त अभियान के लिए शपथ लेते छात्र व शिक्षक।

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर विश्वविद्यालय परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान में सहायक आचार्य डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि सभी लोगों को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा।

डॉ. संदीप ने कहा कि पर्यावरण और जीवन के लिए प्लास्टिक गंभीर खतरा बन गया है। प्लास्टिक का विघटन होने में सैकड़ों वर्षों का समय लग जाता है। माइक्रोप्लास्टिक न केवल समुद्रीय जल जीवों को प्रभावित कर रहे हैं बल्कि हमारे खाद्य पदार्थों से हमारे जीवन को भी रोग ग्रस्त कर रहा है। व्याख्यान में एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी धनन्जय पांडेय ने कहा कि प्लास्टिक मुक्त विश्व के लिए पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों की तलाश कर व्यापक स्तर पर प्रभावी नीति का क्रियान्वयन ही प्लास्टिक मुक्त भविष्य की कुंजी है। सहायक आचार्य डॉ.प्रेरणा अदिति ने कहा कि घर आंगन से कपास, जूट और पेपर बैग का प्रयोग कर प्लास्टिक से विश्व को मुक्त करने में अपना सहयोग किया जा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस पर सामूहिक शपथ ग्रहण कर स्वच्छ वसुंधरा का सभी ने संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से कृषि संकाय के अधिष्ठता डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ आयुष पाठक, डॉ विकास दुबे, फार्मेसी विभाग के प्राचार्य प्रो. एसके सिंह, डॉ अमित दूबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, अनिल कुमार मिश्रा, डॉ पवन कुमार कन्नौजिया, डॉ अंकिता मिश्रा, डॉ विकास यादव की सक्रिय सहभागिता रही।

गोरखनाथ विवि को प्लास्टिक मुक्त करने का लिया संकल्प

महायोगी गोरखनाथ विवि में संकलप लेते छात्र–छात्राएं। अमृत विचार

गोरखपुर, अमृत विचार। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर विश्वविद्यालय परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया गया। सहायक आचार्य डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि सभी लोगों को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा। व्याख्यान में राष्ट्रीय सेवा योजना के आर्यभट्ट इकाई के कार्यक्रम अधिकारी धनंजय पांडेय ने कहा कि प्लास्टिक मुक्त विश्व के लिए पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों की तलाश कर व्यापक स्तर पर प्रभावी नीति का क्रियान्वयन ही प्लास्टिक मुक्त भविष्य की कुंजी है। अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस पर सामूहिक शपथ ग्रहण कर स्वच्छ वसुंधरा का सभी ने संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से कृषि संकाय के अधिष्ठता डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ आयुष पाठक, डॉ विकास दुबे, फार्मेशी विभाग के प्राचार्य प्रो. एसके सिंह, डॉ अमित दूबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, अनिल कुमार मिश्रा, डॉ पवन कुमार कन्नौजिया, डॉ अंकिता मिश्रा, डॉ विकास यादव आदि की सक्रिय सहभागिता रही।

महायोगी गोरखनाथ विवि को प्लास्टिक मुक्त करने का लिया गया संकल्प

अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर विश्वविद्यालय में व्याख्यान का आयोजन

gorakhpur@inext.co.in

GORAKHPUR (3 July): महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस पर बुधवार को परिसर को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया गया. विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान में सहायक आचार्य डा.संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि सभी लोगों को स्वयं के अथक प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में अपनी दिनचर्या में कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लेना होगा.

उन्होंने कहा कि पर्यावरण और जीवन के लिए प्लास्टिक गंभीर खतरा बन गया है, प्लास्टिक का विघटन होने में सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं. माइक्रोप्लास्टिक न केवल समुद्री जल जीवों को प्रभावित कर रहा, बल्कि खाद्य पदार्थों से हमारे जीवन को भी रोग ग्रस्त कर रहा है. व्याख्यान में राष्ट्रीय सेवा योजना की आर्यभट्ट इकाई के कार्यक्रम अधिकारी धनंजय पांडेय ने कहा कि पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों की तलाश कर व्यापक स्तर पर प्रभावी नीति का क्रियान्वयन ही प्लास्टिक मुक्त भविष्य की कुंजी है. सहायक आचार्य डा.प्रेरणा अदिति ने कहा कि कपास, जूट और पेपर बैग का प्रयोग कर प्लास्टिक से विश्व को मुक्त करने में सहयोग किया जा सकता है.

ये रहे मौजूद

इस दौरान कृषि संकाय के अधिष्ठता डा.विमल कुमार दुबे, डा.आयुष पाठक, डा.विकास दुबे, फार्मेसी विभाग के प्राचार्य प्रो. एसके सिंह, डा.अमित दूबे, डा.अनुपमा ओझा, डा.आशुतोष श्रीवास्तव, अनिल कुमार मिश्रा, डा. पवन कुमार कन्नौजिया, डा.अंकिता मिश्रा तथा डा.विकास आदि मौजूद रहे.

साइबर सुरक्षा आज वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग है : डॉ.मंजु सिंह

महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी में साइबर जागरूकता वर्कशॉप

gorakhpur@inext.co.in

GORAKHPUR (4 July): महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी में राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ, उच्च शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ, (राष्ट्रीय सेवा योजना, युवा कार्यक्रम एवम खेल मंत्रालय,भारत सरकार) तत्वाधान में एक साइबर जागरूकता वर्कशॉप में आयोजित की गई. जिसकी अध्यक्षता यूनिवर्सिटी के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई चीफगेस्ट राज्य संपर्क अधिकारी डॉ.मंजु सिंह, विशिष्ट अतिथि समरदीप सक्सेना युवा अधिकारी, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार उपस्थति थे. वेबनार के प्रारंभ में राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ.अखिलेश कुमार दुबे ने सभी का वर्कशाप में स्वागत किया एवं इस वर्कशाप के उद्देश्य से सभी को परिचित कराया. इसके बाद डॉ. मंजु सिंह ने सभी को साइबर क्राइम से हो रहे अपराध एवं इससे बचने तथा किसी पीडिता की किस प्रकार से गृह मंत्रालय द्वारा बनाई गई.

टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल

राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल के माध्यम से मदद कर सकते हैं. आज हम आधुनिक टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने के कारण साइबर सुरक्षा हम सभी के लिए वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग बन गया है. आज महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी गोरखपुर के इस वर्कशाप से हम उत्तर प्रदेश में साइबर जागरूकता अभियान की शुरआत कर रहे है. अब पुरे प्रदेश में राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े संस्थान में लगातार 100 साइबर जागरूकता अभियान वर्कशाप कराई जाएगी.

समाज सेवा का कार्य

कुलपति ने कहा कि हम साइबर क्राइम से बचाव या समाज सेवा का कोई भी कार्य होगा. यह यूनिवर्सिटी हमेशा पंक्ति में प्रथम स्थान पर खड़ा मिलेगा. हम सभी साइबर स्वच्छ प्रथाओं का पालन करें और साइबर क्राइम से बचें. यूनिवर्सिटी के कुल सचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने इस आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की. अंत में डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन कर वर्कशाप का समापन किया. कार्यक्रम में उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत, डॉ.डीएस अजीथा, डॉ.शशिकांत सिंह, डॉ.सुनील कुमार,डॉ.विकास यादव, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ.कीर्ति कुमार यादव, प्रज्ञा पांडेय, डॉ.संदीप कुमार श्रीवास्तव, कुवर अभिनव सिंह राठोर, डॉ.अभिषेक सिंह, सध्विनन्दन पाण्डेय, सुमन सिंह, कविता साहनी, कमलनयन श्रीवास्तव, ओंकार, अनिल आदि मौजूद रहे.

100 साइबर जागरूकता अभियान वर्कशाप कराई जाएगी.

यूनिवर्सिटी हमेशा पंक्ति में प्रथम स्थान पर खड़ा मिलेगा. हम सभी साइबर स्वच्छ प्रथाओं का पालन करें और साइबर क्राइम से बचें.

साइबर सुरक्षा आज वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग है : डॉ.मंजु

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ ,उच्च शिक्षा विभाग ,उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ ,राष्ट्रीय सेवा योजना, युवा कार्यक्रम एवम खेल मंत्रालय,भारत सरकार तत्वाधान में एक साइबर जागरूकता कार्यशाला ऑनलाइन माध्यम में आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई मुख्य अतिथि विशेषकार्यधिकारी एवं राज्य संपर्क अधिकारी राष्टीय सेवा योजना उत्तर प्रदेश शासन डॉ.मंजु सिंह विशिष्ट अतिथि समरदीप सक्सेना युवा अधिकारी, युवा कार्यक्रम एवम खेल मंत्रालय,भारत सरकार उपस्थति थे।

डॉ. मंजु सिंह ने सभी को साइबर क्राइम से हो रहे अपराध एवं इससे बचने तथा किसी पीडिता की किसप्रकार से गृह मंत्रालय द्वारा बनायी गयी राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल के माध्यम से मदद कर सकते हैं आज हम आधुनिक टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने के कारण साइबर सुरक्षा हम सभी के लिय वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग बन गया है आज महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के इस कार्यशाला से हम उत्तर प्रदेश में साइबर जागरूकता अभियान की शुरआत कर रहे है अब पुरे प्रदेश में राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े संस्थान में लगातार 100 साइबर जागरूकता अभियान कार्यशाला करायी जायेगी ।अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति ने कहा हम आपको विश्वास दिलाते है कि साइबर क्राइम से बचाव या समाज सेवा का कोई भी कार्य होगा यह विश्वविद्यालय हमेशा पंक्ति में प्रथम स्थान पर खड़ा मिलेगा।

साइबर सुरक्षा वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग : डा.मंजू

■ गोरखपुर।

सहारा न्यूज ब्यूरो

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ ,उच्च शिक्षा विभाग ,उत्तर प्रदेश शासन के तत्वावधान में आनलाइन साइबर जागरूकता कार्यशाला आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल बाजपेई मुख्य अतिथि विशेषकार्यधिकारी एवं राज्य संपर्क अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना उत्तर प्रदेश शासन डा. मंजु सिंह, विशिष्ठ अतिथि समरदीप सक्सेना युवा अधिकारी, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय मौजूद रहे।

■ गोरखनाथ विवि में साइबर जागरूकता कार्यशाला का आनलाइन आयोजन

वेबनार के प्रारम्भ में राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डा. अखिलेश कुमार दुबे ने सभी का कार्यशाला में स्वागत किया एवं इस कार्यशाला के उद्देश्य से सभी को परिचित कराया। इसके बाद डा. मंजु सिंह ने साइबर क्राइम से हो रहे अपराध एवं इससे बचने तथा किसी पीड़िता की किस प्रकार से गृह मंत्रालय द्वारा बनायी गयी राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल के माध्यम से मदद कर सकते हैं के बारे में बताया। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति ने कहा हम आपको विश्वास दिलाते है कि साइबर क्राइम से बचाव या समाज सेवा का कोई भी कार्य होगा यह विवविद्यालय हमेशा पंक्ति में प्रथम स्थान पर खड़ा मिलेगा। कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने इस आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम में उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत, संकायध्यक्ष डा. डीएस अजीथा,डा. शशिकांत सिंह, डा. सुनील कुमार,डा. विकास यादव, डा. कुलदीप सिंह, डा. कीर्ति कुमार यादव, प्रज्ञा पाण्डेय, डा. संदीप कुमार श्रीवास्तव, कुवर अभिनव सिंह राठोर, डा. अभिषेक सिंह , सध्विनन्दन पाण्डेय , सुमन सिंह , कविता साहनी, ,कमलनयन श्रीवास्तव, ओंकार एवं अनिल आदि मौजूद रहे।

साइबर क्राइम से बचाव के तरीकों की दी जानकारी

गोरखनाथ विवि

गोरखपुर, कार्यालय संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ की ओर से गुरुवार को साइबर जागरूकता कार्यशाला (ऑनलाइन माध्यम) का आयोजन किया गया। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई ने की।

मुख्य अतिथि राज्य संपर्क अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना डॉ. मंजू सिंह एवं विशिष्ठ अतिथि युवा अधिकारी, खेल मंत्रालय समरदीप सक्सेना थे। डॉ. मंजू सिंह ने सभी को साइबर क्राइम से हो रहे अपराध एवं इससे बचने की जानकारी दी।

कुलपति ने कहा साइबर क्राइम से बचाव या समाज सेवा के कार्यों में विश्वविद्यालय हमेशा आगे रहेगा। कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की।

एनसीसी कैडेट्स ने योद्धाओं को किया नमन

महायोगी गोरखनाथ विवि में कारगिल विजय दिवस पर हुआ खास आयोजन

गोरखपुर (विधान केसरी)। कारगिल विजय दिवस पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की एनसीसी यूनिट की तरफसे भाषण एवं कारगिल युद्ध दृश्यम पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता से पूर्व सभी एनसीसी कैडेट्स ने शहीदों के नाम पर दीप जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठता प्रो. सुनील सिंह ने कहा कि कारगिल युद्ध का आपरेशन विजय भारतीय सेना के शौर्य पराक्रम और बलिदान को समर्पित है। आज ही के दिन भारतीय सेना के जवानों ने टाइगर हिल पर तिरंगा फहराकर पाकिस्तान को हराया था। इस युद्ध का नेतृत्व कैप्टन विक्रम बत्रा कर रहे थे। उन्हें उनके साहस के लिए मरणोपरांत भारत के सबसे प्रतिष्ठित और सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। एनसीसी अधिकारी डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि कारगिल विजय दिवस भारत की एकता, अखंडता और संप्रभुता की पहचान कराता है।

पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता में कैडेट श्रद्धा उपाध्याय, खुशी गुप्ता, सागर जायसवाल, पूजा सिंह, सागर जायसवाल भाषण प्रतियोगिता में श्रद्धा उपाध्याय, आंचल पाठक, अश्मिता सिंह ने प्रतिभाग किया। निर्णायक डॉ. पवन कनौजिया एवं डॉ. अंकिता मिश्रा ने तकनीकी आधार पर प्रतियोगिता का मूल्यांकन किया। आयोजन में प्रमुख रूप से डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. अमित दूबे, डॉ. धीरेंद्र, डॉ. प्रेरणा अदिति, धनंजय पांडेय आदि उपस्थित रहे।

करगिल विजय दिवस : सेना के शौर्य पर जश्न

गोरखपुर (एसएनबी)। कारगिल विजय दिवस पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की एनसीसी यूनिट की तरफ से भाषण एवं कारगिल युद्ध दृश्यम पावरपइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता से पूर्व सभी एनसीसी कैडेट्स ने शहीदों के नाम पर दीप जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

कारगिल विजय दिवस पर महायोगी गोरखनाथ विवि में मोमबत्ती जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित करते एनसीसी कैडेट्स के साथ प्रो.सुनील सिंह,डा.पवन कनौजिया,डा.अंकिता मिश्र,डा.अनुपमा ओझा व अन्य।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिषता प्रो. सुनील सिंह ने कहा कि कारगिल युद्ध का आपरेशन विजय भारतीय सेना के शौर्य पराक्रम और बलिदान को समर्पित है। आज ही के दिन भारतीय सेना के जवानों ने टाइगर हिल पर तिरंगा फहराकर पाकिस्तान को हराया था। इस युद्ध का नेतृत्व कैप्टन विक्रम बत्रा कर रहे थे। उन्हें उनके साहस के लिए मरणोपरांत भारत के सबसे प्रतिष्ठित और सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। एनसीसी अधिकारी डा. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि कारगिल विजय दिवस भारत की एकता, अखंडता और संप्रभुता की पहचान कराता है। पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन प्रतियोगिता में कैडेट श्रद्धा उपाध्याय, खुशी गुप्ता, सागर जायसवाल, पूजा सिंह, सागर जायसवाल, भाषण प्रतियोगिता में श्रद्धा उपाध्याय, आंचल पाठक, अश्मिता सिंह ने प्रतिभाग किया। निर्णायक डा. पवन कनौजिया एवं डा. अंकिता मिश्रा ने तकनीकी आधार पर प्रतियोगिता का मूल्यांकन किया।

कारगिल विजय दिवस के अवसर पर शुक्रवार को दीनदयाल उपाध्याय गोरखनाथ विश्वविद्यालय की शिक्षकों और एनसीसी कैडेट ने कैंडल जलाकर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। ● हिन्दुस्तान

एनसीसी कैडेट ने योद्धाओं को किया नमन

गोरखपुर। कारगिल विजय दिवस पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की एनसीसी यूनिट की तरफ से भाषण एवं कारगिल युद्ध दृश्यम पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता से पूर्व सभी एनसीसी कैडेट ने शहीदों के नाम पर दीप जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठता प्रो. सुनील सिंह ने कहा कि कारगिल युद्ध का आपरेशन विजय भारतीय सेना के शौर्य पराक्रम और बलिदान को समर्पित है। एनसीसी अधिकारी डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि कारगिल विजय दिवस भारत की एकता, अखंडता और संप्रभुता की पहचान कराता है। पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता में कैडेट श्रद्धा उपाध्याय, खुशी गुप्ता, सागर , पूजा सिंह, सागर जायसवाल भाषण में, श्रद्धा उपाध्याय, आंचल पाठक, अश्मिता सिंह ने प्रतिभाग किया। निर्णायक डॉ.पवन कनौजिया एवं डॉ. अंकिता मिश्रा रहे।

भाजपाइयों ने गौतम गुरुं

गोरखपुर। भाजपा महानगर के कार्यकत पर अमर शहीद लेफ्टिनेंट गौतम गुरुंग क किया। प्रदेश उपाध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह ने कह त्याग की भावना पर हमें गर्व है। यह दिन है जिन्होंने मातृभूमि के लिए अपने प्राणों अध्यक्ष राजेश गुप्ता ने कहा कि मां भारत बलिदान देने वाले अमर जवानों को नमन महामंत्री ओम प्रकाश शर्मा, उपाध्यक्ष रमे श्रीवास्तव, शिवम पाण्डेय, महानगर मंत्री मीडिया प्रभारी बच्चा पांडे नवीन, जितेंद्र सिंह, बृज किशोर राय आदि मौजूद रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि में लगाए गए 7 हजार पौधे

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। प्रदेश सरकार की तरफ से आज चलाए गए एक पेड़ मां के नाम वृहद पौधरोपण अभियान के तहत शनिवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में सात हजार पौधे लगाए गए। उच्च शिक्षा, वन विभाग, नागरिक सुरक्षा कोर एवं एनसीसी महानिदेशालय द्वारा पौधरोपण अभियान का शुभारंभ कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने पौधा लगाकर किया।

कुलपति डॉ. वाजपेयी ने कहा कि प्रकृति के संरक्षण के लिए पौधरोपण अति आवश्यक हैं। कुलसचिव डॉ. राव ने कहा कि हम सभी मिलकर पेड़ों की घटती संख्या को बढ़ाकर पर्यावरण को बचाने में अपनी महती भूमिका सुनिश्चित करें। डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, धनन्जय पाण्डेय, डॉ आशुतोष श्रीवास्तव आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

स्वयंसेवकों ने किया पौधरोपण

गोरखपुर। बाबू पुरूषोत्तम दास राधा रमण दास महाविद्यालय के एनएसएस द्वारा 'एक पेड़ मां के नाम' कार्यक्रम के तहत पौधरोपण किया गया। प्राचार्य डॉ. विकास रंजन मणि त्रिपाठी ने बताया कि अमरूद, आम, लीची के फलदार एवं बरगद, नीम के छायादार पौधे लगाए गए। प्राचार्य ने पर्यावरण सुरक्षा एवं स्वच्छता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर डॉ. देव चंद प्रज्ञा, हरिशचंद्र सिंह, रीतेश मिश्र, शिव सहाय श्रीवास्तव, सुरेंद्र मिश्र, मोनू, उषा आदि मौजूद रहे।

एनडीआरएफ की टीम ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के स्टूडेंट को दिया प्रशिक्षण

संजय कुमार। दबंग इंडिया

गोरखपुर। देश के कई हिस्सों में आ रही आपदाओं को ध्यान में रखते हुए सरकार ने लोगों को आपदाओं से बचने और सुरक्षा को लेकर लोगो को जागरूक किया जा रहा है एनडीआरएफ टीम के सदस्यों ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम कॉलेज के स्टूडेंट को बचाव और सुरक्षा के टिप्स दिए।

11 वीं वाहिनी राष्ट्रीय आपदा मोचन बल के उपमहानिरीक्षक मनोज कुमार शर्मा के मार्गदर्शन में गोरखपुर में आज दिनांक 20.7. 2024 को एनडीआरफ गोरखपुर रीजनल रिस्पांस फोर्स के उप कमांडेंट संतोष कुमार के द्वारा संरचना एवं कार्यशैली वह आपदा प्रबंधन के विषय में व्याख्यान दिया गया कमांडेंट संतोष कुमार ने बताया कि आए दिन होने वाली , भूस्खलन, भूकंप ,बाढ़ ,आदि इमरजेंसी के समय लोग भयभीत हो जाते हैं, जिससे उन्हें शारीरिक हानि उठानी पड़ती है। एनडीआरएफ के जवानों ने लोगों को आपदा के समय घायलों को बिना संसाधनों के किस प्रकार प्राथमिक उपचार, अस्पताल ले जाने के लिए एक (कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम) के जरिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग के छात्र-छात्राओं को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया।

एनडीआरएफ के निरीक्षक दीपक मंडल उपनिरीक्षक कुलदीप कुमार एवं अन्य रेस्क्यूर मौजूद रहे। इस अवसर पर महा योगी गोरखनाथ के विद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ अतुल बाजपेई कुल सचिव डॉ प्रदीप कुमार राव एनसीसी एएनओ डॉ संदीप कुमार श्रीवास्तव व कॉलेज समस्त स्टूडेंट मौजूद रहे।

एनडीआरएफ ने गोरखनाथ विवि में दिया आपदा से बचाव का प्रशिक्षण

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फार्मेसी संकाय में शनिवार को एनडीआरएफ की टीम ने विद्यार्थियों और एनसीसी कैडेट्स को आपदा से बचाव का प्रशिक्षण दिया। एनडीआरफ रीजनल रिस्पांस फोर्स के उप कमांडेंट संतोष कुमार की देखरेख में जवानों ने आपदा के समय घायलों को बिना संसाधनों के प्राथमिक उपचार, बाढ़ के समय बचाव के उपकरण तैयार करने आदि को लेकर प्रशिक्षित किया। साथ ही आग जैसी आपदा में घायल व्यक्तियों को अस्पताल से पूर्व चिकित्सा के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण के दौरान राष्ट्रीय आपदा मोचन बल के उपमहानिरीक्षक मनोज कुमार शर्मा, निरीक्षक दीपक मंडल, उप निरीक्षक कुलदीप कुमार एवं अन्य रेस्क्यूर मौजूद स्वागत फार्मेसी संकाय के प्रमुख डॉ. शशिकांत सिंह और आभार ज्ञापन डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने किया।

आपदा से निपटने के लिए एनडीआरएफ की टीम ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम बालापार में कॉलेज के स्टूडेंट को किया प्रशिक्षण

गोरखपुर | दैनिक सच टाईम्स

गोरखपुर : 20 जुलाई (दैनिक सच टाईम्स ब्यूरो) देश के कई हिस्सों में आ रही आपदाओं को ध्यान में रखते हुए सरकार ने लोगों को आपदाओं से बचने और सुरक्षा को लेकर लोगो को जागरूक किया जा रहा है एनडीआरएफ टीम के सदस्यों ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम कॉलेज के स्टूडेंट को बचाव और सुरक्षा के टिप्स दिए। 11 वीं वाहिनी राष्ट्रीय आपदा मोचन बल के उपमहानिरीक्षक श्री मनोज कुमार शर्मा* के मार्गदर्शन में गोरखपुर में आज *दिनांक 20.7. 2024 *को* एनडीआरफ गोरखपुर रीजनल रिस्पांस फोर्स के *उप कमांडेंट श्री संतोष कुमार* के द्वारा संरचना एवं कार्यशैली वह आपदा प्रबंधन के विषय में व्याख्यान दिया गया कमांडेंट श्री संतोष कुमार ने बताया कि आए दिन होने वाली , भूस्खलन, भूकंप ,बाढ़ ,आदि इमरजेंसी के समय लोग भयभीत हो जाते हैं, जिससे उन्हें शारीरिक हानि उठानी पड़ती है। एनडीआरएफ के जवानों ने लोगों को आपदा के समय घायलों को बिना संसाधनों के किस प्रकार प्राथमिक उपचार, अस्पताल ले जाने के लिए एक capacity building program (कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम) के जरिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग के छात्र-छात्राओं को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया साथ ही में बाढ़ के दौरान किन -किन उपकरणों का प्रयोग कर लोगो को कैसे बचाया जा सके। यह भी बारीकी से समझाया इसमें आग जैसी आपदाओं में घायल हुए व्यक्तियों को अस्पताल से पूर्व चिकित्सा के बारे में बताया गया और साथ ही आपदाओं में प्रयोग किए जाने वाले रेस्क्यू तकनीकी फंसे हुए लोगों को निकालना उन्हें प्राथमिक उपचार देने के बारे में बताया गया एनडीआरएफ के निरीक्षक दीपक मंडल उप निरीक्षक कुलदीप कुमार एवं अन्य रेस्क्यूर मौजूद रहे।इस अवसर पर महा योगी गोरखनाथ के विद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ अतुल बाजपेई कुल सचिव डॉ प्रदीप कुमार राव एनसीसी एएनओ डॉ संदीप कुमार श्रीवास्तव कॉलेज समस्त स्टूडेंट मौजूद रहे।

एनडीआरएफ ने गोरखनाथ विवि में दिया बचाव का प्रशिक्षण

गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फार्मेसी संकाय में शनिवार को एनडीआरएफ की टीम ने विद्यार्थियों और एनसीसी कैडेट्स को आपदा से बचाव का प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर एनडीआरफ गोरखपुर रीजनल रिस्पांस फोर्स के उप कमांडेंट संतोष कुमार की देखरेख में जवानों ने आपदा के समय घायलों को बिना संसाधनों के प्राथमिक उपचार, बाढ़ के समय बचाव के उपकरण तैयार करने आदि को लेकर प्रशिक्षित किया। साथ ही आग जैसी आपदा में घायल व्यक्तियों को अस्पताल से पूर्व चिकित्सा के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण के दौरान राष्ट्रीय आपदा मोचन बल के उप महानिरीक्षक मनोज कुमार शर्मा, निरीक्षक दीपक मंडल, उप निरीक्षक कुलदीप कुमार आदि मौजूद रहे।

नशा मुक्ति का लिया गया संकल्पः महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की तरफ से नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम अधिकारी साध्वी नंदन पाण्डेय ने नशे से होने वाले दुष्प्रभाव एवं हानियों के बारे में सभी को बताया। नशा मुक्ति अभियान के नोडल अधिकारी दिलीप मिश्रा ने कहा कि नशा मुक्त भारत के निर्माण में युवाओं को आगे आना होगा। कार्यक्रम में नर्सिंग कलेज की प्राचार्या डा. डीएस अजीथा, डा. शशिकांत सिंह, डा. सुनील कुमार, डा. विकास यादव आदि मौजूद रहे।

गोरखनाथ विवि में आपदा से बचाव का प्रशिक्षण देते एनडीआरएफ के जवान ● सौ . स्वयं

एनडीआरएफ की टीम ने छात्रों को दिया प्रशिक्षण

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम कालेज के छात्रों को बचाव और सुरक्षा के टिप्स दिए

गोरखपुर । बांसगांव संदेश । देश के कई हिस्सों में आ रही आपदाओं को ध्यान में रखते हुए सरकार लोगों को आपदाओं से बचने और सुरक्षा को लेकर जागरूक कर रही है। इसी कड़ी मे शनिवार को एनडीआरएफ टीम के सदस्यों ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम कॉलेज के स्टूडेंट को बचाव और सुरक्षा के टिप्स दिए।11 वीं वाहिनी राष्ट्रीय आपदा मोचन बल के उपमहानिरीक्षक मनोज कुमार शर्मा के मार्गदर्शन में एनडीआरफ गोरखपुर रीजनल रिस्पांस फोर्स के उप कमांडेंट संतोष कुमार के द्वारा संरचना एवं कार्यशैली व आपदा प्रबंधन के विषय में व्याख्यान दिया गया। कमांडेंट संतोष कुमार ने बताया कि आए दिन होने वाली, भूस्खलन, भूकंप, बाढ़ आदि इमरजेंसी के समय लोग भयभीत हो जाते हैं, जिससे उन्हें शारीरीक हानि उठानी पड़ती है। आपदा के समय घायलों को बिना संसाधनों के किस प्रकार प्राथमिक उपचार, अस्पताल ले जाने के लिए एक कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम के जरिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग के छात्र–छात्राओं को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया।एनडीआरएफ के निरीक्षक दीपक मंडल, उप निरीक्षक कुलदीप कुमार एवं अन्य रेस्क्यूर मौजूद रहे। इस अवसर पर महा योगी गोरखनाथ के विद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ अतुल बाजपेई, कुलसचिव डॉ प्रदीप कुमार राव, एनसीसी एएनओ डॉ संदीप कुमार श्रीवास्तव, कॉलेज के समस्त स्टूडेंट मौजूद रहे।

आपदा से निपटने के लिए एनडीआरएफ की टीम ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम बालापार में कॉलेज के स्टूडेंट को किया प्रशिक्षण

सुनहरा संसार संवाददाता

गोरखपुर। देश के कई हिस्सों में आ रही आपदाओं को ध्यान में रखते हुए सरकार ने लोगों को आपदाओं से बचने और सुरक्षा को लेकर लोगो को जागरूक किया जा रहा है एनडीआरएफ टीम के सदस्यों ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम कॉलेज के स्टूडेंट को बचाव और सुरक्षा के टिप्स दिए 11 वीं वाहिनी राष्ट्रीय आपदा मोचन बल के उपमहानिरीक्षक मनोज कुमार शर्मा के मार्गदर्शन में गोरखपुर में आज दिनांक 20.7. 2024 को एनडीआरफ गोरखपुर रीजनल रिस्पांस फोर्स के उप कमांडेंट संतोष कुमार के द्वारा संरचना एवं कार्यशैली वह आपदा प्रबंधन के विषय में व्याख्यान दिया गया कमांडेंट श्री संतोष कुमार ने बताया कि आए दिन होने वाली , भूस्खलन, भूकंप , बाढ़ , आदि इमरजेंसी के समय लोग भयभीत हो जाते हैं, जिससे उन्हें शारीरिक हानि उठानी पड़ती है। एनडीआरएफ के जवानों ने लोगों को आपदा के समय घायलों को बिना संसाधनों के किस प्रकार प्राथमिक उपचार, अस्पताल ले जाने के लिए एक कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम) के जरिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फामेर्सी विभाग के छात्र- छात्राओं को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया साथ ही में बाढ़ के दौरान किन -किन उपकरणों का प्रयोग कर लोगो को कैसे बचाया जा सके यह भी बारीकी से समझाया इसमें आग जैसी आपदाओं में घायल हुए व्यक्तियों को अस्पताल से पूर्व चिकित्सा के बारे में बताया गया और साथ ही आपदाओं में प्रयोग किए जाने वाले रेस्क्यू तकनीकी फंसे हुए लोगों को निकालना उन्हें प्राथमिक उपचार देने के बारे में बताया गया। एनडीआरएफ के निरीक्षक दीपक मंडल उप निरीक्षक कुलदीप कुमार एवं अन्य रेस्क्यूर मौजूद रहे।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर उत्तर प्रदेश-273007

प्रकाशक

राष्ट्रीय सेवा योजना

एवं

राष्ट्रीय कैडेट कोर

coordinator.nss@mgug.ac.in, mguniversitygkp@mgug.ac.in www.mgug.ac.in